मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

दिल की खेती

"अगर यह दिल की ज़मीन बंजर हो गयी तो इसके अंदर कांटे पैदा हो सकते हैं, फूल पैदा नहीं हो सकते। इसके अन्दर तलवारें तो उग सकती हैं, अशांति पैदा हो सकती है शांति नहीं हो सकती। नफ़रत तो पैदा हो सकती है, मुहब्बत पैदा नहीं हो सकती है। अपने बच्चों को पालने के लिये यतीमों के पेट फ़ाड़ने का जज़्बा पैदा हो सकता है लेकिन किसी परेशान हाल, किसी पीड़ित, किसी मुसीबत के मारे की सुरक्षा तथा अनाथ की संरक्षता का भाव पैदा नहीं हो सकता।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)
(खुतबात–ए–अली मियाँ : ५/३४३)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

OCT 18

₹10/-

शौक़–ए–आख़िरत

मौत के समय ईमान वाले का सम्मान

हज़रत बराअ इब्ने आज़िब रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम स०अ० ने फ़रमाया:

जब मोमिन दुनिया से रुख़्सत और आख़िरत की आमद की हालत में होता है तो उसके आस–पास आसमान से फ़रिश्ते आते हैं, जिनके चेहरे आफ़ताब की तरह रोशन होते हैं, जिनके पास जन्नत के कफ़न होते हैं (कफ़न के लफ़्ज़ से लोगों को हैबत न हो यह जन्नत के लिबास होते हैं, हर तरह से दिलकश व नशातअंगेज़) और जन्नत की ख़ुशबुएं होती हैं। यहां तक कि वह उस मोमिन मुख़्तसर की हद्दे नज़र के फ़ासिले पर बैठ जाते हैं।''

इससे क़ब्ल मोमिन की रवानगी–ए–आख़िरत का जो बयान शुरू हुआ था वह अब अज़ सरे नौ शुरू होता है:

''अब मौत के फ़रिश्ते आदमी के सर के क़रीब आ जाते हैं (शफ़क़त व मलाइमत के साथ) उससे कहते हैं: ऐ जान: जिसको इत्मिनान था ख़ुदा के हुक्मों पर, चल अल्लाह की मग़्फ़िरत और रज़ामन्दी की तरफ़, उस पर जान इस आसानी से बाहर निकलती है जैसे क़तरा मशकीज़े से ढुलक आता है, अगरचे तुम ज़ाहिरी हालत उसके ख़िलाफ़ देखो।''

यह आख़िरी फ़िक़रा बहुत ही अहम और पुर मानी है। आख़िरी वक़्त जिस्म पर जो ताब व तशंज वग़ैरह की कैफ़ियत दिखाई देती है। हुज़ूर स०अ० का इरशाद उन्हीं चीज़ों की तरफ़ है और इरशाद हो रहा है कि:

''एतबार के क़ाबिल जिस्म की हालत नहीं रूह की हालत है।''

पस अगर मसरूर व शादां हैं जो जिस्म की हालत नज़र अंदाज़ करो। रूहे मोमिन पर तो यह ख़ास वक़्त नुज़ूले रहमत का होता है।

''और फ़रिश्ते (उस आसमान के) रूह के निकालने के बाद उसे मल्कुल मौत के हाथ में चश्मे ज़दन के लिये भी नहीं छोड़ते, बल्कि उसे जन्नती कफ़न और ख़ुशबू में रख देते हैं और उसमें से ऐसी ख़ुशबू निकलती है जैसी नफ़ीस से नफ़ीस मुश्क से निकलती है और वे उसे लेकर ज़मीन से ऊपर को चढ़ते हैं तो फ़रिश्तों के जिस गिरोह पर भी उनका गुज़र होता है तो पूछते हैं कि पाकीज़ा रूह कौन है?तो वह उसके अच्छे से अच्छे नाम से जो दुनिया में मशहूर था, बतलाते हैं कि फ़लां इब्ने फ़लां हैं। (इस हालते आली के साथ) वह उस रूह को ले जाते हैं, क़रीब वाले आसमान (यानि समाए दुनिया) तक और फिर वहां से गुज़रते हुए ले जाते हैं उसे (इन्तिहाई बुलन्दी यानि) सातवें आसमान तक। अब अल्लाह तआला का इरशाद होता है कि इसका नाम लिख दो इल्लियीन में, और फिर उसे सवाले क़ब्र के लिये ज़मीन पर ले जाते हैं, उसी रूह फिर जिस्म की तरफ़ लौटाई जाती है, आलमे बरज़ख़ के मुतनासिब अब उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं और वे मैय्यत को बिठा देते हैं।''

और ज़ाहिर है कि ला इन्तिहा मुसाफ़त के सफ़र में मोमिन को न किसी क़िस्म का ताब होगा, न थकान, बल्कि सर ता सर लुत्फ़, फ़रहत व इम्बिसात ही हासिल होगा। मुद्दते सफ़र इस हैरतअंगेज़ सरअत से ख़त्म हो जायेगी कि उसके सामने रॉकेटों की ख़लाई परवाज़ भी गर्द होकर रहेगी।

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:१० अक्टूबर २०१८ ई० वर्ष:१०

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नारवुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

स्वार्थ का तूफ़ान.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अल्लाह की मदद की शर्त.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मायूस क्यों खड़ा है अल्लाह बहुत बड़ा है.....५
मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब

त्याग तथा समानता क्या है?.....७
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

जनाज़े के एहकाम.....९
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

हिंसा तथा आतंकवाद.....१२
सैय्यद हामिद मोहसिन

राजनीतिक हाशिये पर क्यों हैं मुसलमान.....१६
डॉक्टर मुज़फ़्फ़र हुसैन ग़ज़ाली

अल्लाह पर भरोसा.....१९
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

सीरिया–एक संयुक्त युद्ध मोर्चा.....२०
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

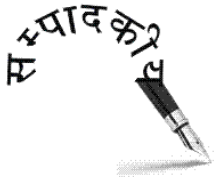

सम्पादकीय

स्वार्थ का तूफ़ान

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

दुनिया ने बड़े–बड़े तूफ़ान देखे जिन्होंने न जाने कितने घरों को, कितनी बस्तियों को वीरान कर दिया। पूरे के पूरे शहर तबाह हो गये लेकिन इन्सान बाक़ी रहा। उसकी इन्सानियत बाक़ी रही। जो सितम के मारे हुए थे, ज़ख़्म खाये हुए थे उनको संभाला गया। मुरझाई हुई खेती फिर लहलहाने लगी इसलिए कि इन्सानियत का जौहर बाक़ी था। आज दुनिया जिस तूफ़ान से जूझ रही है वह इन्सानियत को फ़ना के घाट उतारना चाहता है। उसने मुहब्बत व हमदर्दी के सब रिश्तों को पामाल कर दिया है। भाई भाई का गला काटने को तैयार है। इसके आगे औलाद की मुहब्बत भी दम तौड़ती नज़र आ रही है, माँ–बाप की अज़मत व मुहब्बत की उसके आगे क्या हैसियत। सब तिनके की तरह ढह जाएगा। यह ख़ुदगर्ज़ी, मफ़ाद परस्ती और अनानियत का तूफ़ान है। इसकी लपेट में पूरी दुनिया है। क्या अमीर क्या ग़रीब, क्या पढ़ा लिखा क्या जाहिल, क्या जवान क्या बूढ़ा, सब उसके शिकार हैं। कहीं उसक मौजें इतनी ऊंची हैं कि ऊंची से ऊंची इमारते भी महफ़ूज़ नहीं और कहीं उसका असर कुछ कम नज़र आता है मगर कोई इस तूफ़ान से महफ़ूज़ नहीं है। शायद ही कुछ ऐसे गगनचुम्बी टीले हों जो उसके असर से बचे हुए हों। अफ़सोस की बात यह है..........हाली के शब्दों में: पड़े सोते हैं बेख़बर अहले कश्ती।

इन्सान का क्या होगा। अस्ल जौहर ही अगर न रहा तो इन्सान कब रहा। इन्सान और जानवर में फ़र्क़ ही क्या रहा।

यह तूफ़ान यूरोप से उठा, जहां अख़लाक़ को जिहालत समझा गया। किसी दूसरे को फ़ायदा पहुंचाना मूर्खता माना गया। जहां भेड़िये को एक सिम्बल के तौर पर दिखाया गया। पूंजीवाद भी उसी की एक निशानी है, जहां मालदार ग़रीब का ख़ून चूसता है और इसको अक़्ल व समझ का उच्च स्तर मानता है।

वृधा आश्रम बनाये गये और बूढ़े मां–बाप को अपनी आसानी और राहत के लिये उनके हवाले कर दिया गया। जहां मां–बाप भी औलाद के बारे में ख़ालिस बिज़नेस माइन्ड से सोचने के आदी हो गये हैं। ख़ुदगर्ज़ी का यह सैलाब आप पूरी तरह पूर्वी देशों में दाख़िल हो चुका है। यहां भी ओल्ड ऐज होम्स बन चुके हैं और यहां भी अपनी आराम और राहत के लिये हर काम करने की छूट होने लगी है।

अपने फ़ायदे के लिये सबकुछ किया जा सकता है। देश बेचा जा सकता है। मानवता को नीलामी की मन्डी में खड़ा किया जा सकता है। मानव मूल्यों की यहां कोई पूछ नहीं। अख़लाक़ बेहैसियत हैं। सिर्फ़ फ़ायदा दुनिया का सिर्फ़ फ़ायदा चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामूहिक। ख़ुदगर्ज़ी व्यक्तियों में भी है और पार्टियों में भी, जमाअतों में भी और देश में भी। इसके दायरे छोटे भी हैं और बड़े भी। शायद गिने–चुने लोग हों जो उसके चंगुल से आज़ाद हों।

इस तरह के तूफ़ान में ज़रूरत है एक ऐसे डैम की जो एक मज़बूत दीवार की भांति हो। जो इन्सान की इन्सानियत को बचा सके। उनकी मुहब्बत की गर्मी को बाक़ी रख सके। गिरते हुए व्यवहारिक मूल्यों को संभाल सके।

रसूलुल्लाह स0अ0 ने साढ़े चौदह सौ साल पहले इन्सानियत की गिरती हुई दीवार को संभाला था। इन्सान को इन्सानियत की मेराज अता की थी। उसको ज़िन्दगी का मक़सद समझाया था। वहदत–ए–रब और वहदत–ए–अब की ऐसी इन्सानी वहदत बख़्शी थी जिसका तसव्वुर भी उस वक़्त के इन्सान के पास नहीं था।

इस तूफ़ान से बचने का यही एक रास्ता है। अख़लाक़ व किरदार का यही एक डैम है जो रसूलुल्लाह स0अ0 ने दुनिया के लिये तैयार किया था। उसको मज़बूत करने की ज़रूरत है और दुनिया को उसी के साये तले लाने से उसको तूफ़ान से बचाया जा सकता है। अगर दुनिया न संभली, रसूलुल्लाह स0अ0 को आइडियल न बनाया तो दुनिया तबाही के उस गढ़े में गिर सकती है कि फिर शायद उसको संभाला न जा सके।

अल्लाह की मदद की शर्त

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अल्लाह तआला ने दुनिया इम्तिहान के लिये बनायी है। इन्सान को इसलिए पैदा किया है कि इन्सान दुनिया में अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ निज़ाम क़ायम करके दिखाए। अब वह निज़ाम कितना क़ायम करता है और अल्लाह को कितना अपना मालिक समझता है और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता या किसी और को भी अपने ख़ालिक़ व मालिक की तरह समझता है, यह दो नुक़्ता–ए–नज़र हो जाते हैं; एक अल्लाह की रज़ा पर अमल करना है और दूसरा दुनिया से महज़ फ़ायदा उठाना है और अपने नफ़्स और फ़ायदे के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना है, सूरह कहफ़ का मरकज़ी उनवान उन्हीं दो नुक्तों की तौज़ीह व तफ़सीर है।

सूरह कहफ़ में सबसे पहले असहाबे कहफ़ के वाक़्ये का ज़िक्र है। अल्लाह तआला बताता है कि असहाबे कहफ़ का वाक़्या यह है कि वह कुछ नवजवान थे, जो ईमान वाले थे और उनका ईमान इतना मज़बूत था कि वह हर तरह की कुर्बानी के लिये तैयार थे लेकिन उनको ईमान का सौदा गवारा नहीं था। लिहाज़ा जब शैतानी ताक़तों का शिकंजा उन नवजवानों पर सख़्त हुआ और उनको कुफ़्र पर मजबूर किया गया तो उन्होंने आपस में मशवरा किया कि हमें यहां से चले जाना चाहिये और जब हम उन लोगों और उनके माबूदों से अलग हों तो किसी को कानो–कान ख़बर न हो वरना लोग किसी भी तरह हमें अपने ईमान पर क़ायम नहीं रहने देंगे। क्योंकि ज़ालिम हुकूमत थी और यह कुछ लोग ही थे। पूरी क़ौम भी उनके अक़ीदे पर नहीं थी। लिहाज़ा यही मुनासिब अमल और राय किसी गार में जाकर पनाह ली जाए और ज़ालिमों को कुछ पता न चले कि यह नवजवान कहां गये। अर्थात उनकी नज़रों से दूर हो जाएं। ज़ाहिर है कि अगर वह शहर या किसी मकान में रहने तो पता चल जाता, इसलिए किसी ऐसी सुनसान जगह पर पनाह लेना मुनासिब था जहां किसी का गुज़र न हाता हो।

असहाबे कहफ़ ने सोचा कि जब हम ग़ार में पनाह लिये रहेंगे तो अल्लाह हमारी मदद करेगा और हम किसी भी तरह इस ग़ार में गुज़ारा कर लेंगे, लेकिन ज़ालिमों के हाथ नहीं आएंगे, वरना वह शिर्क व कुफ़्र पर मजबूर करेंगे, इसलिए किसी अच्छे बने हुए ग़ार में रहना ही बेहतर है। इंशाअल्लाह हमारा रब हमारे लिये अपनी रहमत खोल देगा।

असहाबे कहफ़ ने यह भी ख़्याल किया कि अल्लाह तआला ही के हाथ में सबकुछ है। वही रिज़्क़ देता है और उसी की इबादत की जाती है, लिहाज़ा जब हम अल्लाह के लिये ग़ार में छिपेंगे तो अल्लाह तआला वहां हमारा बन्दोबस्त करेगा, हमारे लिये अपनी रहमत खोल देगा और हमारे साथ ऐसा मामला करेगा कि हमारी ज़रूरत पूरी हो जाएगी, यानि वहां अल्लाह तआला ज़िन्दगी के बाक़ी रहने की कोई शक्ल पैदा कर देगा। जब हम अल्लाह पर भरोसा करके यह ख़तरा उठाएंगे कि घर–बार छोड़कर, अपने वसाएल छोड़कर बिल्कुल सुनसान जगह पर रहेंगे, जहां हमको किसी का तआउन नहीं मिल रहा होगा। तो जो अल्लाह जानवरों को रिज़्क़ देता है, सेहरा में रिज़्क़ देता है, वही हमको भी रिज़्क़ देगा, यह उसके हाथ में है और उसकी कोई भी शक्ल हो सकती है। इसके वास्ते अल्लाह कोई भी सहारा या ज़रिया पैदा कर देगा। अतः उसी सहारे का यूं तज़किरा किया गया है:

"और आप देखेंगे कि सूरज जब निकलता तो उनके ग़ार के दाएं जानिब होकर गुज़र जाता और जब गुरूब होता तो उनसे कतरा कर बाईं तरफ़ से निकल जाता

और वह उसकी एक खुली जगह में थे। यह अल्लाह की एक निशानी है। जिसको अल्लाह हिदायत दे दे वही हिदायत पर है और जिसको गुमराह कर दे तो आपको उसके लिये कोई मददगार नहीं मिल सकता जो उसकी रहनुमाई करने वाला हो।''

आयत से मालूम होता है कि उनका ईमान इन्तिहाई मज़बूत था और अल्लाह तआला की ख़ास रहमत उनके साथ थी, जिसका नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने उनके बाक़ी रहने का बेहतरीन इन्तिज़ाम फ़रमाया और वह इस तौर पर कि जब सूरज निकलता तो उनकी ग़ार से ज़रा हट कर दाएं–बाएं तरफ़ से गुज़र जाता और जब गुरूब होता तो शुमाल की तरफ़ ज़रा हट कर गुरूब होता यानि सूरज की शुआएं उन लोगों पर सीधे तौर पर नहीं पड़ती थीं, बल्कि यह लोग उससे कुछ हटकर थे, जिसकी वजह से उनपर सूरज की तपिश नहीं पड़ती थी, लेकिन इन्सानी ज़िन्दगी के लिये सूरज भी बहुत ज़रूरी है, लिहाज़ा उन लोगों के लिये सूरज का तुलूअ और गुरूब मुफ़ीद था। अल्लाह तआला ने सूरज की शुआओं को इन्सान की ज़िन्दगी का ज़रिया बनाया है। सूरज की जो किरनें ज़मीन पर पड़ती हैं तो फ़िज़ा में उनके ज़रिये ऐसा मौसम बनता है जो इन्सानी जिस्म के लिये ज़रूरी और मुफ़ीद है अगर आदमी सूरज से बिल्कुल कटा रहे और उसको सूरज की रोशनी से बिल्कुल फ़ायदा न पहुंचे तो उसकी सेहत को नुक़सान पहुंचता है। मानो अल्लाह तआला ने सूरज को भी इन्सान की सेहत व ज़िन्दगी का एक ज़रिया बनाया है। मज़कूरा आयत में इसी की तरफ़ इशारा है कि असहाबे कहफ़ को हस्बे ज़रूरत सूरज की गर्मी से फ़ायदा पहुंचता था, लेकिन सूरज उनको तपिश नहीं देता था और यह अल्लाह तआला की निशानियों में से है कि अल्लाह ने यह शक्ल पैदा फ़रमा दी जो इन्सान के लिये मुफीद है।

आयत के आख़िरी हिस्से में फ़रमाया कि अल्लाह जिसको राहे रास्त अता फ़रमाता है वह राहे रास्त पर आता है। यानि यह महज़ तौफ़ीक़े इलाही से होता है। कोई शख़्स इसका दावा न करे चाहे वह कितना ही अल्लाह वाला हो। वह हरगिज़ यह न समझे कि हमने यह मक़ाम ख़ुद पैदा किया है, बल्कि हर शख़्स अल्लाह का फ़ज़ल और रहमत समझे कि उसने हमको राहे रास्त पर डाला है, वरना हम ख़ुद हिदायत पाने वाले नहीं थे अगर अल्लाह हिदायत न देता। फ़रमाया; यह अल्लाह की निशानियों में से है कि अल्लाह ऐसी सूरत पैदा फ़रमा देता है जिसकी इन्सान को ज़रूरत है, वरना आम हालात में ऐसी सूरत पैदा नहीं होती।

और फ़रमायाः जिसको अल्लाह गुमराह रखना चाहता है तो उसको कोई वली नहीं है यानि उसको कोई नहीं बचा सकता। फिर उसका कोई दोस्त और हमदर्द नहीं है और उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं है, न कोई मुर्शिद है न वली। ''वली'' अरबी से ताल्लुक़ वाले को कहते हैं, इसीलिए अरबी में चचाज़ाद भाई को भी वली कहते हैं और अपने मोहतरम व हमदर्स दोस्त को भी वली कहते हैं। यानि जिसको अल्लाह गुमराह रखना चाहे उसके लिये न कोई वली पाओगे न कोई हमदर्द पाओगे। न उसको कोई हमदर्द और दोस्त मिलेगा, न कोई उसका साथी और न कोई उसका अज़ीज़ होगा जो उसका मुसीबत में काम दे और न कोई मुरशिद होगा और न कोई राह बताने वाला होगा, अगर अल्लाह ने यह फ़ैसला फ़रमा दिया कि यह गुमराह है।

लेकिन अल्लाह कोई फ़ैसला यूं ही नहीं करता, बल्कि उसने फ़रमा दिया कि तुमको जो भी मुसीबत पेश आती है वह तुम्हारी ही हरकत व परेशानी की वजह से आती है। अगर अल्लाह देखता है कि किसी में यह ज़िद है कि वह हक़ की बात नहीं मानना चाहता, खुले तरीक़े से हक़ बात की मुख़ालिफ़त कर रहा है और उसके इल्म में हक़ीक़त आ गयी है, फिर भी नहीं मान रहा है तो उसका मतलब यह है कि वह बड़ा ज़िद्दी है। फिंर यह फ़ैसला होता है कि अब तुम भुगतो अगर तुम नहीं मानते। तुमको समझाया जा रहा है कि देखो उसमें तुम्हें नुक़सान है। लेकिन तुम किब्र व गुरूर में अड़े हुए हो कि हम दूसरों की बात कैसे मान ले, अगर हम अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लें तो ऐसा बहुत होता है। ऐसे मौक़े बहुत आते हैं, जिनमें आदमी सही बात को इसलिए नहीं मानता कि इसमें मानो हमारी हार है।

.....शेष पेज 12 पर

मायूस क्यों खड़ा है अल्लाह बहुत बड़ा है?

जनाब मौलाना तक़ी उस्मानी

यह झूठा प्रोपगन्डा तो अर्से से किया ही जा रहा था कि इस्लाम इस दौर में इज्तिमाई सतह पर रो बा अमल नहीं आ सकता, लेकिन अब यह ख़ाल भी लोगों के दिलों में पैदा होने लगा है कि इन्फ़िरादी ज़िन्दगी में भी दीन पर अमल करना बहुत मुश्किल हो गया है और मौजूदा माहौल में दीन पर क़ायम रहना जोए शेर लाने से कम नहीं है लेकिन हमारे नज़दीक यह ख़्याल भी एक बड़े धोखे से कम नहीं है। इसमें शक नहीं है कि हम एक ऐसे ज़माने में पैदा हुए हैं जिसमें चारों तरफ़ से हम पर फ़ित्नों की बारिश हो रही है, सियासत मईशत से लेकर इन्फ़िरादी ज़िन्दगी और घरेलू माहौल तक हर जगह फ़साद बरपा है। मुसलमान जहां कहीं आबाद हैं या ग़ैरों के ज़ुल्म व सितम का शिकार हैं आपस की फूट में मुब्तिला हैं, बातिल की कूव्वतें हर जगह उन्हें ललकार रही हैं और वह उनके ख़ौफ़ व रोब से दबते और पिस्ते चले जा रहे हैं। इस्लाम जो उन तमाम मुसीबतों का वाहिद इलाज था अमली ज़िन्दगी से ख़ारिज हो चुका है। दिलों में यह ख़्याल पैदा हो चुका है कि अगर कोई शख़्स इस्लामी एहकाम पर ठीक–ठीक अमल करना भी चाहे तो आस–पास का फ़साद हर क़दम पर उसके लिये रुकावट बनेगा। बाज़ार रिश्वत, सूद, क़िमा और सट्टा से भरे हुए हैं। झूठ और धोखेबाज़ी कोई ऐब नहीं रही। उरयानी और फ़हाशी का यह आलम है कि निगाहों को जाए पनाह और तसव्वुर को राहे फ़रार नहीं मिलती। क़त्ल व ग़ारतगरी का बाज़ार गर्म और बात–बात पर दूसरों की जान लेना रोज़मर्रा का मामूल बन चुका है। हलाल कमाई के रास्ते धीरे–धीरे कम होते चले जा रहे हैं और हराम और नाजायज़ आमदनियों को शेरे मादर समझ लिया गया है। औलाद मां–बाप से बाग़ी हो रही हैं और अगर अगले वक़्तों के कुछ लोग दीन के एहकाम पर पूरी तरह अमल करना चाहते भी हैं तो नई नस्ल पर क़ाबू पाने का रास्ता समझ नहीं आता। क़दम–क़दम पर शर व फ़साद के मुहर्रिकात ही जो उस जवान ख़ून को गुमराही और बेराह–रवी पर आमादा कर रहे हैं। नश्र व इशाअत के तमाम ज़राए और तफ़रीह व सक़ाफ़त के नाम पर बदअख़लाक़ी के तमाम तरीक़े उसके दिल से खुरच–खुरच कर ख़ुदा का ख़ौफ़ और आख़िरत की फ़िक्र उसके दिल से मिटा रहे हैं और अल्लाह व रसूल का नाम तक उसके लिये अजनबी होता जा रहा है। यही नस्ल धीरे–धीरे आगे बढ़कर देश व क़ौम की बाग़डोर संभाल रही है। यह नवजवान आज भी अपने बुज़ुर्गों को कम से कम मूर्ख अवश्य समझती है जिनके फ़िक्र व अमल की फ़ेहरिस्त में ख़ुदा और रसूल स0अ0 और आख़िरत नाम की कोई चीज़ हुआ करती थी। कल जब मिल्लत की कश्ती का खेवनहार उसके सिवा कोई नहीं होगा तो उस वक़्त यह क्या–क्या गुल खिलाएगी?आज इसका तसव्वुर भी शायद हमारे लिये मुश्किल हो।

यह सब क्यों हो रहा है?क्यों हो रहा है?ऐसे हालात में हमें क्या करना चाहिये?गुमराही का बढ़ता हुआ सैलाब आख़िर क्योंकर रहेगा?उसे कौन और किस तरह रोक सकता है?

यह सवालात हैं जिन्होंने आज हर मुसलमान को परेशान किया हुआ है और अब यह परेशानी धीरे–धीरे मायूसी में तब्दील होने लगी है।

सवाल यह है कि इन हालात का तक़ाज़ा वाक़्यतन यही है कि हम अपने मुस्तक़बिल से बिल्कुल मायूस होकर बैठ जाएं?और यह सोच कर हाथ–पैर हिलाना भी छोड़ दें कि इस दौर में दीन पर अमल करना मुमकिन नहीं रहा? अगर आप ज़रा भी ग़ौर फ़रमाएंगे तो उन सभी सवालों का जवाब नफ़ी में मिला होगा।

माहौल की जिस ख़राबी का आज हम सामना कर रहे हैं इसमें इस्लाम की सबसे पहली हिदायत यह है कि अल्लाह के साथ अपने ताल्लुक़ को मज़बूत करो, आज हमारी परेशानियों और बेचैनियों की अस्ल जड़ यह है कि हम मन की इच्छा के ग़ुलाम होकर रह गये हैं। हमारी निगाह हर वक़्त माद्दी नफ़े और नफ़सियाती

लज़्ज़तों के सैराब पर मज़कूर रहती है और अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात पर जो एतमाद व यक़ीन और उसकी कुदरते कामिला का जो इस्तहज़ार एक मुसलमान की सबसे बड़ी दौलत थी, उसे हम खो चुके हैं।

आज की दुनिया चूंकि इस बेक़रार और सुकून नाआशना ज़िन्दगी का अच्छी तरह तर्जुबा कर चुकी है इसलिए उसके वास्ते इस्लाम की दी हुई इस रूहानी सुकून की ज़िन्दगी की तरफ़ लौटना ज़्यादा आसान है। नफ़्स और माद्दे के गरदाब निकलने के बाद जब भी कोई शख़्स अल्लाह से अपना रिश्ता इस्तवार करने की कोशिश करेगा, उसे पहले ही क़दम पर अंदाज़ा हो जाएगा कि उसकी ज़िन्दगी में वह क्या कमी थी जिसने उसके लिये आराम व राहत के साि वसाएल को बेकैफ़ियत और बेअसर बनाया हुआ था।

इन्सान इस कायनात का ख़ालिक़ व मालिक नहीं है। वह किसी की मख़लूक़ है। उसका मक़सदे ज़िन्दगी ही यह है कि किसी की बन्दगी करे।

आज हमारी मुश्किलात का सबसे कामयाब और बुनियादी इलाज सिर्फ़ यह है कि अल्लाह के साथ हमारा ताल्लुक़ मज़बूत हो और यह एक ऐसा इलाज है जिसे हर दौर में हर वक़्त किसी रुकावट के बिना अख़्तियार किया जा सकता है। इस्लाम की तालीमात में "इबादात" का शोबा इसी मक़सद के लिये रखा गया है कि अगर उन पर ठीक–ठीक अमल कर लिया जाए तो इबादत के यह तरीक़े अल्लाह के साथ उसका ताल्लुक़ इस्तवार हो, इसलिए इबादतों को तमाम एहकाम पर मुक़द्दम रखा गया है और सरकारे दो आलम स0अ0 के इरशादात का तक़रीबन एक तिहाई हिस्सा उन ही की तालीम व तरबियत व ताकीद व तरग़ीब पर मुश्तमिल है।

आज दुनिया के हालात कैसे ही ख़राब सही लेकिन इस्लामी एहकाम का यह हिस्सा ऐसा है कि मामूली अज़्म व हिम्मत और इरादे के बाद उस पर अमल चंदा दुश्वार नहीं है। जहां उन इबादतों की अदायगी में फ़िलवाक़ेअ कोई दुश्वारी पैदा होती है वहां अल्लाह तआला ने ख़ुद ऐसी आसानियां पैदा कर दी हैं जिनके बाद दुश्वारियों के शिकवे का हक़ बाक़ी नहीं रहता।

अगर हम अल्लाह की फ़र्ज़ की हुई उन इबादतों को ठीक–ठीक अंजाम दे लें तो उनका लाज़मी ख़ास्सा यह है कि वह अल्लाह की कुदरते कामिला पर मुकम्मल यक़ीन पैदा करती हैं और जब किसी को ईमान व यक़ीन पैदा करती हैं और जब किसी को ईमान व यक़ीन की यह दौलत हासिल हो जाए तो फिर उसके लिये कोई मुश्किल नहीं रहती, फिर वह सख़्त से सख़्त हालात में भी मायूस नहीं होता।

आइये आख़िर में हम अपने बुज़ुर्गों से सुनी हुई एक बेहतरीन तदबीर का अआदा करें। फ़र्ज़ कीजिए कि आप अपने माहौल के हाथों अपने को बिल्कुल मजबूर पाते हैं। ऐश परस्ती, आफ़ियत कोशी और तन आसानी से अज़्म व हिम्मत के हथियारों को कुन्दा कर रखा है और आप किसी तदबीर से अपनेआप पर क़ाबू नहीं पा सकते, लेकिन एक काम है जो आप हर वक़्त, हर जगह, हर माहौल में, बिला तकल्लुफ़ अंजाम दे सकते हैं। आप अपने दिन–रात के चौबीसों घंटे में से थोड़ा सा वक़्त – पांच मिनट, दस मिनट इस काम के लिये निकालिये और तन्हाई में बैठकर अल्लाह तआला से सिर्फ़ यह दुआ कीजिए कि या अल्लाह! मैं अपने माहौल के हाथों मजबूर हो चुका हूं, अपनी इस्लाह की हर तदबीर नाकाम हो चुकी है। अज़्म व हिम्मत नाकारा हो चुके हैं। मैं अपने अंदर अपनी ताक़त नहीं पाता कि तने तन्हा माहौल की उन तारीकियों का मुक़ाबला कर सकूं। तू अपने फ़ज़्ल व करम से मेरी मदद फ़रमा, मेरे अज़्म व हिम्मत को बेदार फ़रमा, मुझे अपने दीन के एहकाम पर अमल पैदा होने की ताक़त व तौफ़ीक़ अता फ़रमाइये।

अगर कोई शख़्स रोज़ाना पाबन्दी के साथ ख़ुलूसे दिल और सिदक़े नियत से यह काम कर लिया करे तो तर्जुबा यह है कि इस काम से मुश्किलों की सारी गाठें एक–एक कर खुलती चली जाती हैं। दिल में नया अज़्म, नई हिम्मत, नये वलवले और नये हौसले पैदा होते हैं और आख़िरकार यह छोटा सा अमल बहुत ही ख़ुशगवार दीनी इन्क़िलाब की तम्हीद बन जाता है।

त्याग व समानता क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

त्याग का श्रेष्ठ उदाहरणः

"और वह (दूसरों को) अपनी जानों पर मुक़द्दम रखते हैं चाहे वह तंगदस्ती का शिकार हों।" (सूरह हश्रः 9)

इस आयत के नुज़ूल का पस मंज़र यह बयान किया जाता है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह स0अ0 की ख़िदमत में कुछ मेहमान आये, आपने अपने घरों में पूछा कि कुछ खाने में है? सब जगह यही जवाब आया कि अल्लाह के नाम के सिवा इस वक़्त घर में कुछ नहीं है, हम लोग ख़ुद फ़ाक़े से हैं, रात के खाने का कोई इन्तिज़ाम नहीं है। आप स0अ0 ने मस्जिद में ऐलान फ़रमाया कि हमारे मेहमान आयें हैं, आज रात को कौन उनकी मेज़बानी करेगा? एक सहाबी खड़े हुए और उन्होंने कहाः अल्लाह के रसूल स0अ0! मैं हाज़िर हूं, उनको मैं अपने घर ले जाऊंगा और उन्होंने यह तहक़ीक़ भी नहीं कि मेरे घर में कुछ खाने को है या नहीं है। उन्होंने सोचा कि बड़ी सआदत की बात है कि मैं अल्लाह के रसूल स0अ0 के मेहमान को अपने घर ले जाऊंगा, लिहाज़ा उन मेहमान को घर ले गये और बीवी से पूछा कि खाने को कुछ है या नहीं हैं? बीवी ने जवाब दियाः खाने को कुछ नहीं है, सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना बचा रखा है, सहाबी–ए–रसूल ने कहाः अब मैं अल्लाह के रसूल स0अ0 के मेहमान को लेकर आया हूं, इसलिए वह खाना उन्हीं को खिलाना है लिहाज़ा तुम बच्चों को किसी तरह बहला–फुसला कर सुला दो, और बच्चों का खाना अल्लाह के रसूल स0अ0 के मेहमान को खिला दो, और चूंकि हमें भी साथ बैठना होगा तो ऐसा करेंगे कि जब खाना शुरू होगा तो चिराग़ इस तरह बुझा देंगे जैसे हवा से बुझ गया हो और बस अपना हाथ मुंह तक ले जाएंगे और खाना नहीं खाएंगे, इस तरह वो लोग खा लेंगे और हम नहीं खाएंगे, हम यही ज़ाहिर करेंगे कि हम भी खा रहे हैं ताकि उनका पेट भर जाए, इसलिए कि खाना बहुत कम है और अगर हम भी खाएंगे तो पूरा नहीं होगा। इसलिए उन्होंने ऐसा ही किया, मेहमानों को दस्तरख़्वान पर बिठाया और जब बच्चों ने रोना शुरू किया तो उनकी मां ने बहला कर सुला दिया, जब बच्चे सो गये तो खाना लगाया और ख़ुद भी साथ में बैठे और किसी बहाने से चिराग़ बुझा करके खाने में साथ रहे और हाथ ऊपर–नीचे करते रहे। मेहमानों ने समझा कि यह भी खा रहे हैं, हालांकि उन्होंने एक निवाला भी नहीं खाया। जब सुबह हुई तो हुज़ूर–ए–अक़दस स0अ0 की ख़िदमत में तशरीफ़ लाए। रसूलुल्लाह स0अ0 को वही के ज़रिये इस वाक़्ये की इत्तेला मिल चुकी थी। आप स0अ0 ने उनके हाज़िर होते ही ख़ुशख़बरी सुनाई और मुबारक बाद दी, बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि आप स0अ0 ने फ़रमायाः

यह वे लोग हैं जो अपने ऊपर दूसरों को तरजीह देते हैं, चाहे वह फ़ाक़े से हों, भूक से हो, उनको खाने की ज़रूरत है लेकिन वह ख़ुद नहीं खा रहे हैं, दूसरों को खिला रहे हैं।

हज़रात–ए–सहाबा का यह ग़ैर मामूली ईसार है। यह नमूने इसलिए बयान किया जाते हैं कि उम्मत किसी दर्जे में उन्हें अख़्तियार करे। यह सिर्फ़ वाक़्यात नहीं हैं कि वाक़्यात बयान कर दिये गये और कुछ मज़ा आया, वाक़्यात इसलिए बयान किये जाते हैं कि हम अपनी ज़िन्दगी को जो बिल्कुल दूसरे रुख़ पर जा रही है, उसको बेहतर बनाने की कोशिश करें।

बिगाड़ का कारणः

इस समय समाज में जो बीमारी सबसे ज़्यादा है वह

स्वार्थ की बीमारी है। हम यह नहीं चाहते कि दूसरों को इज़्ज़त मिले, दूसरों को तरक़्क़ी मिले, हमें हसद की आग खाने लगती है। यहां तक होता है कि आदमी चैन से नहीं बैठता और उस आग में ख़ुद भी जलता है और दूसरों को भी आजिज़ करता है। दूसरों को नीचा दिखाने के ऐसे–ऐसे उपाय करता है कि ख़ुद ही ज़लील होता चला जाता है। हदीस में आता है कि हसद की आग इन्सान को इस तरह से खाती है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है। लकड़ी में आग लग जाए तो लकड़ी राख हो जाती है, इसी तरह अगर किसी शख़्स के अन्दर हसद की आग भड़क रही हो तो जलकर ख़ाक हो जाता है। न उसकी सेहत बाक़ी रहती है न ईमान। ईमान ख़तरे में पड़ जाता है, लेकिन ख़ुदगर्ज़ी का मिज़ाज ऐसा होता है कि आदमी फिर हलाल व हराम नहीं देखता, बस यह देखता है कि हमें हर चीज़ मिलनी चाहिये और आज सारी दुनिया में इसी का झगड़ा है, हमारे समाज के झगड़ों की बुनियाद यही है, वह झगड़े इदारे के हों, कुर्सी के हों, हुकूमत के हों, यहां तक कि दीनी इदारों और दीनी तहरीकों के झगड़े हों। अल्लाह माफ़ करे चूंकि हमारी तरबियत नहीं होती है, हमारे अन्दर ईसार नहीं है। इसका नतीजा यह है कि हम अपने को अहल समझते हैं और हमें यह ख़्याल रहता है कि हमको यह मन्सब मिलना चाहिये, हम उसके मुस्तहिक़ हैं, अगर ज़बान से नहीं भी कहें तो दिल में उसे पालते रहते हैं और जब ऐन वक़्त पर वह चीज़ नहीं मिलती तो एक आग सी लग जाती है और वह आग कभी इन्तिक़ाम की शक्ल में सामने आती है और कभी न जाने किन–किन शक्लों में सामने आती है। अगर ग़ौर करें तो यही सूरते हाल हमारे इदारों और तहरीकों की है। अगर कोई भी काम में थोड़ा आगे बढ़ गया है तो साथ वाले बर्दाश्त नहीं कर पाते और इसकी वजह यह है कि हमारा मिज़ाज दीनी नहीं है। हमारी जो तरबियत होनी चाहिये वह नहीं हुई है।

बीमारी का इलाजः

सहाबा के वाक़्यात मुख़्तलिफ़ मुनासिबतों से इसलिए पेश किये जाते हैं कि यह नमूना हैं, उनसे आदमी फ़ायदा उठाए, अपनी ज़िन्दगी को बनाने की कोशिश करे। इसकी ज़रूरत हम सबको है। आदमी देखे कि हमारे अन्दर क्या–क्या चीज़ पल रही है। कुछ बीमारियां कैंसर की तरह होती हैं, जिनका आदमी को पता नहीं चलता और जब तक पता चलता है तब तक उसकी जान मुसीबत में पड़ जाती है। इसी तरह इन्सान को तब पता चलता है जब ईमान ख़तरे में पड़ जाता है, इसीलिए पहले से देखने की ज़रूरत है। अपना चेकअप करवाने की ज़रूरत है और यह चेकअप अल्लाहवालों के यहां होता है, यह डॉक्टर हैं, उनके पास बड़ी मशीनें हैं, अल्लाह ने उनको ईमान की ताक़त दी है। उनकी ख़िदमत में आदमी जाता है, उनकी संग रहता है, तो यह देखकर बताते हैं कि तुम्हारे अन्दर यह बीमारियां हैं और कई बार नहीं भी बताते हैं, जैसा कि कई बार आप मरीज़ से बता दें कि तुम कैंसर के मरीज़ हो तो वह मर जाएगा, लेकिन अब डाक्टरों का हाल बहुत बुरा है। यह भी ख़ुदगर्ज़ी की बात है कि डॉक्टर मुंह पर ही कह देते हैं कि तुम दो महीने के बाद मर जाओगे। ज़ाहिर है कि अगर उसको नहीं मरना है तो मर जाएगा। लेकिन अल्लाह वाले हुक्मा होते हैं। वह कभी–कभी बताते भी नहीं है, लेकिन रूहानी बीमारी का इलाज करते हैं और इलाज का तरीक़ा बताते हैं। ज़िक्र के तरीक़े बताते हैं और उससे आदमी के अन्दर बदलाव पैदा होते हैं। वह सिफ़ात पैदा होती हैं जो मतलूब हैं, इसलिए अपनी इलाज कराने की ज़रूरत पड़ती है। हमारा हाल यह है कि न जाने कैसी बीमारियों में पड़े हैं, हमें ख़ुद उनका पता नहीं, इसलिए हमें इलाज कराना पड़ेगा, जब अच्छी सिफ़त पैदा होंगी तो हम आगे बढ़ेंगे, हमारा समाज आगे बढ़ेगा। आज समाज का बिगाड़ इसी वजह से है कि हम अपना रूहानी इलाज नहीं करवाते, और फिर बड़े–बड़े ओहदों पर पहुंच जाते हैं। बड़े–बड़े काम सुपुर्द हो जाते हैं और हमारा इलाज नहीं होता है। इसका नतीजा यह होता है कि हम काम को भी बिगाड़ देते हैं और उसके वह फ़ायदे हासिल नहीं होते जो होना चाहियें। इसलिए ज़रा कोशिश करने की ज़रूरत पड़ती है।

जनाज़े के एहकाम

मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी

मैय्यत के पसमान्दगान से ताज़ियतः

मैयत के पसमांदगान से ताज़ियत बड़े सवाब का काम है। चुनान्चे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 रसूलुल्लाह स0अ0 से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमायाः जो किसी मुसीबतज़दह की ताज़ियत करे, उसे मुसीबतज़दह के बराबर अज्र मिलेगा।

सांत्वना देने का तरीक़ा यह है कि सांत्वना देने वाला परेशान हाल से कहेः "अल्लाह तआला तुम्हारे सवाब बढ़ाए। तुम्हारी अच्छी सांत्वना करे, और तुम्हारे मरने वाले की मग़फ़िरत करे।"

या कहेः

"जो ले लिया वह भी अल्लाह का है, जो दिया वह भी उसी का है, और उसके पास हर चीज़ का एक निश्चित समय है।"

जिस घर में ग़मी हो उनके यहां मौत के तीन दिन बाद तक एक बार सांत्वना देने के लिये जाना मुस्तहब है। इसमें भी अफ़ज़ल पहला दिन है। सांत्वना देने के लिये जाने वाले को चाहिये कि मरने वाले के संबंधियों को सब्र करने की ताकीद करे, सब्र के फ़ाएदे और उसके अज्र व सवाब सुनाए और मरने वाले के लिये दुआए मग़फ़िरत करे।

तीन दिन के बाद सांत्वना देने के लिये जाना या दो बार सांत्वना देने के लिये जाना मकरूह है, अल्बत्ता अगर कोई हादसे के समय मौजूद नहीं था (चाहे सांत्वना देने वाला या जिसको सांत्वना देनी है) तो तीन दिन बाद भी सांत्वना देनी जाएज़ है।

मरने वाले के घर वालों की ओर से खाने की दावतः

मरने वालों के घर वालों की तरफ़ से पहले दूसरे या तीसरे दिन दावत करना मकरूह और बिदअत है। इसलिये कि दावत खुशी के मौक़े पर की जाती है न कि ग़मी के मौक़े पर।

ईसाले सवाबः

ईसाले सवाब जितना चाहे करे और जितना अल्लाह तौफ़ीक़ दे मरने वाले की ईसाले सवाब की नियत से फ़क़ीरों पर सदक़ा करे। लेकिन अगर कोई ख़ास चीज़ रस्म बन चुकी हो या उसमें दिखावे का शक हो तो उसको छोड़ देना चाहिये। अल्लामा शामी (रह0) ने इसकी मिसाल कुरआनख़ानी के मौक़े पर खाने की तैयारी और मौसम में क़ब्र के पास ग़ल्ला ले जाने से दी है।

इसी पर कई इलाक़ों की इस रस्म को भी क़यास किया जाए कि जनाज़े के साथ ग़ल्ला क़ब्रिस्तान ले जाते हैं या कुछ रोटियां, गुड़ और घी ले जातें हैं जिसको "तोशा" कहा जाता है। और इसको क़ब्रिस्तान में एकत्र होने वाले फ़क़ीर और गोरकन इत्यादि पर बांट देते हैं कि अव्वलन इसमें दिखावे का शक है और वहां इसको लेने के लिये पेशेवर फ़क़ीर आ जाते हैं, लिहाज़ा क़ब्रिस्तान ले जाने के बजाए घर ही में ज़रूरत मन्दों को देने की अधिकता करें, ताकि उन ख़राबियों से बचा जा सके।

जब हमल साक़ित हो जाएः

अगर हमल साक़ित (गर्भ में पल रहे बच्चे की मृत्यु) हो गया है तो देखा जाएगा कि अगर उसके अंग बिल्कुल न बने हों, तो न उसको नहलाया जाएगा, न कफ़न, न ही जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जाएगी, न बाक़ाएदा क़ब्र बनायी जाएगी, बल्कि किसी कपड़े मे लपेट कर गढ़ा खोदकर ज़मीन में दबा दिया जाएगा।

कुछ अंग बन गये हों और कुछ न बने हों तो सही यह है कि इसका नाम रखा जाए, नहलाया जाए, और किसी कपड़े में लपेट कर नमाज़ के बग़ैर दफ़न कर दिया जाएगा।

और अगर पूरे अंग बनने के बाद पैदाइश हुई हो तो पैदाइश के समय अगर उसमें ज़िन्दगी की कोई निशानी

न हो या सर निकलते समय ज़िन्दा था फिर मर गया तो उसके आदेश नम्बर दो के अनुसार होंगे।

जब सभी अंग बन गये हों:

और अगर पूरे अंग बनने के बाद पैदाइश हुई हो तो पैदाइश के समय अगर उसमें ज़िन्दगी की कोई निशानी न हो या सर निकलते समय ज़िन्दा था फिर मर गया तो उसके आदेश नम्बर दो के अनुसार होंगे।

अगर बदन का अधिकतर हिस्सा निकलते समय ज़िन्दा था तो उसका आदेश उन्हीं बच्चों की तरह होगा जिनकी मौत पैदाइश के बाद हो जाती है। यानि बेहतर यह है कि उनका कफ़न–दफ़न सुन्नत के अनुसार किया जाए। लड़के को तीन कपड़ों में और लड़कियों को पांच कपड़ों में कफ़न दिया जाए। लेकिन यह भी जाएज़ है कि लड़के को सिर्फ़ एक कपड़ा दिया जाए और लड़की को दो कपड़े दिये जाएं। उनका नाम भी रखा जाएगा और बाक़ाएदा नमाज़–ए–जनाज़ा पढ़ कर दफ़न किया जाएगा।

और अगर अधिकतर बदन निकलने से पहले ही मर गया हो तो उसके आदेश नम्बर दो के अनुसार होंगे।

सर की तरफ़ से पैदाइश हो तो सीने तक निकल आने को, और पैरों की तरफ़ से पैदाइश हो तो नाफ़ तक निकलने को अक्सर का हुक्म लगाया जाएगा।

जब मुर्दा औरत के पेट में बच्चा ज़िन्दा महसूस हो:

किसी गर्भवती औरत की मौत हो जाए और पेट की हरकत या किसी और यक़ीनी ज़रिये से मालूम हो रहा है कि बच्चा ज़िन्दा है तो इस बच्चे को पेट चाक कर के निकाल लिया जाए। (फिर वो बच्चा मर जाए तो उसके आदेश पिछली व्याख्या के अनुसार होंगे)

क़ब्रों की ज़ियारत:

मर्दों के लिये क़ब्रों की ज़ियारत करना यानि उनको जाकर देखना मुस्तहब है।

हज़रत बुरैदा (रज़ि0) अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि रसूलल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया:

"मैंने तुमको क़ब्रों की ज़ियारत से मना किया था, तो अब उनकी ज़ियारत किया करो।"

इब्ने माजा ने हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि0) की रिवायत में ये इज़ाफ़ा नक़ल किया है कि:

"इसलिये कि क़ब्रें दुनिया से बेरग़बती (अनाकर्षण) पैदा करतीं हैं और आख़िरत की याद दिलाती हैं।"

लेकिन यह हुक्म सिर्फ़ मर्दों के लिये है, औरतों के बारे में रसूलुल्लाह स0अ0 ने मना किया है।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि "नबी करीम (स0अ0) ने क़ब्रों की ज़ियारत करने वाली औरत पर लानत फ़रमायी।"

क़ब्रों की ज़ियारत करना यानि उनको जाकर देखना, मर्दों के लिये मुस्तहब है, बेहतर यह है कि हफ़्ते में कम से कम एक बार क़ब्र की ज़ियारत की जाए और ज़्यादा बेहतर यह है कि वह जुमा का दिन हो। इसलिए कि मुहम्मद बिन नोमान हदीसे मरफ़ू में बयान फ़रमाते हैं कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: जो अपने वालिदैन या उनमें से किसी एक की क़ब्र की ज़ियारत हर जुमा को करे तो उसकी मग़फ़िरत कर दी जाएगी और उसे वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करने वाला दिखाया जाएगा।

क़ब्रों की ज़ियारत करने का तरीक़ा

1. जब क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो तो सभी क़ब्र वालों की नियत करते हुए सलाम करे। इस सलाम के अलग–अलग अल्फ़ाज़ हदीस में आये हैं। उनमें से जिसको चाहे अपना ले, नीचे कुछ सलाम करने के अल्फ़ाज़ लिखे जा रहे हैं:

"ऐ जमाअत मोमिनीन के घर तुम पर सलामती हो और जिसका तुमसे वादा किया जा रहा था वो तुम्हारे पास कल जल्द आ जाये और हम इंशाअल्लाह तुम लोगों से मिलने आने वाले हैं।"

या कहे:

"मोमिनों और मुसलमानों के घरवालों को सलाम पहुंचे और अल्लाह हममें से पहले जाने वालों को और बाद में जाने वालों पर रहम फ़रमाये और इंशाअल्लाह हम तुम लोगों से ज़रूर आ मिलेंगे।"

या कहे:

"ऐ क़ब्र वालों! तुम पर सलाम हो, अल्लाह तआला हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाये, तुम हमसे आगे जाने वाले हो और हम तुम्हारे पीछे–पीछे आ रहे हैं।"

सलाम के बाद क़िब्ला की तरफ़ पीठ करके और क़ब्र की तरफ़ मुंह करके जितना हो सके कुरआन शरीफ़ पढ़कर मरने वाले को सवाब पहुंचा दे। जैसे: सूरह

फ़ातिहा, सूरह यासीन, सूरह तबारकल्लज़ि, सूरह अल्हाक मुत्तकासुर या "कुल हु वल लाहु अहद" ग्यारह बार या सात बार जितना आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ कर दुआ करें कि या अल्लाह इसका सवाब क़ब्र वाले को पहुंचा दे।

मरने वाले के लिये मग़फ़िरत की दुआ भी करनी चाहिये, रसूलुल्लाह (स0अ0) की आदत–ए–करीमा यह थी की आप (स0अ0) क़ब्र की ज़ियारत (दर्शन) इसलिये भी फ़रमाते थे कि उनके लिये दुआए मग़फ़िरत करें।

कई फ़ुक़्हा के निकट औरतों का क़ब्रिस्तान जाना मुतअलिक़न नाजाएज़ है, लेकिन फ़तवा यह है कि जवान औरतों को जाना तो नाजाएज़ है, लेकिन बूढ़ी औरतें जा सकती हैं, बशर्ते यह कि बग़ैर ज़ेब व ज़ीनत के और बग़ैर ख़ुशबू इस्तेमाल किये हुए पर्दे के साथ जाए और इस बात का यक़ीन हो कि कोई काम शरीअत के ख़िलाफ़ न करेगी, जैसे रोना–पीटना, क़ब्र वालों से हाजत मांगना और दूसरी नाजाएज़ बातें और बिदअतें जो क़ब्रों पर की जाती हैं उन सबसे परहेज़ किया जाए।

ईसाल-ए-सवाब का सुन्नत तरीक़ा:

ईसाल–ए–सवाब एक तरह की दुआ है। आदमी जिस तरह जनाज़े की नमाज़ में मरने वाले के लिये दुआ करता है, इस्तिग़फ़ार का इहतिमाम करता है और अल्लाह तआला की रहमत से उनकी कुबूलियत की उम्मीद करता है। इसी तरह जब वह कोई नेक काम करने की चाहे वह काम पैसे से हो (जैसे ग़रीब को खाना खिलाना, या कपड़े नक़दी वग़ैरह देना या मस्जिद और दीनी मदरसों की तामीर में हिस्सा लेना) या वह काम बदन की इबादतों से संबंधित हो (जैसे कुरआन की तिलावत करना, नफ़िल रोज़े रखना, तस्बीह और कलिमा तैय्यबा वग़ैरह पढ़ना) और अल्लाह तआला से दुआ करे कि या अल्लाह उन नेक कामों को जो कुछ सवाब मुझे मिला है वह सवाब फ़लां व्यक्ति को पहुंचा दे तो अल्लाह की रहमत से उम्मीद है कि अल्लाह इस दुआ को कुबूल कर लेगा। ईसाले सवाल की हक़ीक़त बस इतनी है। बक़िया इसके लिये न कोई ख़ास दिन मुक़र्रर है, न जगह न मख़सूस इबादत, शरीअत ने ईसाल सवाब को बहुत आसान रखा था, लोगों ने इसमें रस्में बढ़ाकर इसको मुश्किल बना दिया है।

शेष: अल्लाह की मदद की शर्त

हो सकता है कि इसके बाद यह समझ जाए कि गोया हम कम समझते थे। अभी तक हम हक़ीक़त को नहीं समझ रहे थे। इससे बचने के लिये आदमी हक़ बात की मुख़ालिफ़त करता है और दलीलें भी देता है कि हमारी बात सही है जबकि अन्दर से समझ रहा है कि हम ग़लत हैं, अलबत्ता अगर हमने इसको मान लिया तो हमारी ज़िल्लत हो जाएगी। ग़रज़ कि ऐसे मौक़े इन्सान की ज़िन्दगी में पेश आते हैं जो अल्लाह को नापसंद होते हैं लिहाज़ा अगर कोई गुमराही के मामले पर ज़िद पर आ जाए तो अल्लाह कहता है कि अब तुम गुमराही में ख़ूब पड़े रहो और उसमें जितना आगे जाना चाहते हो चले जाओ, जितना डूबना चाहते हो डूब जाओ, हमने तुमको मना किया, बताया और समझाया, हम तुम्हारे हमदर्द हैं, तुम्हें बता रहे हैं कि तुमको चोट लग जाएगी, तुम गिर जाओगे, लेकिन तुम अपने ग़ुरूर में बात नहीं मानते, तो फिर ठीक है अब इसका ख़ामियाज़ा भुगतो।

इस पसे मन्ज़र के तहत आयते बाला में इरशाद है कि जिसको अल्लाह गुमराह रखना चाहता है तो उसको कोई नहीं बचा सकता है। ज़ाहिर है कि अगर अल्लाह तआला की हमदर्दी की नज़र हट गयी तो कोई हमदर्द नहीं मिलेगा। इसीलिए अल्लाह तआला असहाबे कहफ़ के सिलसिले में बता रहे हैं कि उन लोगों ने हिम्मत से काम लिया और अपने दीन को बचाने के लिये आख़िरी हद तक जाने को तैयार हो गये तो अल्लाह तआला ने उनकी हिफ़ाज़त का भी इन्तिज़ाम कर दिया, और ऐसा इन्तिज़ाम कर दिया जो मोजज़ा बन गया, जो इन्तिज़ाम आम हालात में नहीं हो सकता और वह इन्तिज़ाम अल्लाह तआला ने किया। इसलिए कि उन लोगों ने भी हर कुर्बानी के लिये अपने को पेश किया और आबादी से कट कर, हर एक से कट कर एक ऐसी जगह छिपे जहां न किसी का ताऊन मिल सकता है, न कोई ज़रिया है, लेकिन यह लोग इसके लिये तैयार हो गये कि मर ही तो जाएंगे, लेकिन हम ईमान को नहीं छोड़ेंगे, ज़ाहिर है अगर कोई ऐसा पुख़्ता साहबे ईमान हो तो इसके लिये अल्लाह की मदद तय है।

हिंसा तथा आतंकवाद

जनाब सैय्यद हामिद मोहसिन

आतंकवाद का कोई धर्म नहीं हो सकता, किसी मज़हब ने तश्द्दुद की तालीम नहीं दी। लेकिन मज़हबी तालीमात का हमेशा हिंसा और जंग के लिये इस्तहसाल किया गया है। दहशतगर्दी की पुश्त पर मज़हब से ज़्यादा समाजी, मआशी और सियासी नाइंसाफियां मुहर्रिक साबित हुई हैं। मगर आज ज़्यादातर दहशतगर्द तन्ज़ीमें मज़हब से तहरीक पाती नज़र आती हैं। इनमें लिब्रेशन टाइगर्स आफ़ तमिल इलम, आइरिश रिपब्लिकेशन आर्मी तथा हिन्दुत्व उग्रवादी संस्था अभिनव भारत का नाम सुर्ख़ियों में है। यहां मज़हबी जज़्बात और अस्करियत बाहम मदग़म होते नज़र आते हैं। मगर मीडिया की बहसों में केवल इस्लाम ही मतऊन होता नज़र आता है। ऐसा क्यों? ग़ालिबन इसकी बड़ी वजह फ़िलहाल अमरीकी इस्तअमार के वह मफ़ादात हैं जो आलमी तौर किसी क़ाबिले शिनाख़्त दुश्मन की बेहद ज़रूरत महसूस करता है। चूंकि हमारे देश भारत में भी दायां बाज़ू के इन्तिहा पसंद अनासिर के मफ़ादात अमरीकी इस्तअमार से बज़ाहिर मुताबिक़त नज़र आते हैं लिहाज़ा इस्लाम, मुसलमान और इस्लामी तंज़ीमें फ़िलवक़्त हदफ़े तन्क़ीद हैं।

मगर मुस्लिम दुनिया में कुछ गुमराह कुन अफ़राद या अनासिर की जद्दोजहद या अक्सरियत को मीडिया हमेशा जिहाद से ताबीर करता रहा है। यह सही है कि यह गुमराहकुन अनासिर मुसलमानों और दूसरे फ़िरक़ो के दरमियान नफ़रत के बीज बोने के दरपे हैं। मगर यह न मुसलमान की अक्सरियत के नुमाइन्दे हैं और न इस्लामी फ़िक्र के। मगर उनकी हर पुरतश्द्दुद कार्यवाही के बाद इल्ज़ाम महज़ इस्लाम और मुसलमानों के सर धरा जाता है।

अवाम के साथ नाइंसाफ़ियां और अवामी हुकूक़ का कुचला जानाा दहशतगर्दी के फ़रोग़ का अहम सबब है। अगर इन नाइंसाफ़ियों और महरूमियों के शिकार लोगों में किसी ख़ास तबक़े या फ़िरक़े के लोगों को ग़ल्बा हासिल हो तो, उनके ख़िलाफ़ जद्दोजहद भी इस फ़िरक़े के मज़हबी जज़्बात और सक़ाफ़ती रंग का असर कुबूल कर लेती है। श्रीलंका में तमिल इलम के अलमबरदार महज़ हिन्दू रहे हैं और आयरलैंड में आइरिश रिपब्लिकन आर्मी के अक्सरियत पसंद ईसाई कैथोलिक एतक़ादात से तहरीक पाते रहे हैं। मगर मीडिया ने इस पहलू की तरफ़ कम ही तवज्जे दी है।

दहशतगर्दी और मुजाहिदीने आज़ादी के बीच ख़ते फ़ासिल ज़्यादा गहरी नहीं। एक क़ौम के लिये दहशतगर्द कहलाने वाला फ़र्द दूसरी क़ौम के लिये मुजाहिदे आज़ादी हो सकता है। सरदार भगत सिंह के केस पर नज़र डालें। वह करोड़ो हिन्दुस्तानी अवाम के लिये हीरो और नजातदहिन्दा था मगर बर्तानवी हुक्मरानों के नज़दीक वह महज़ दहशतगर्द था। वह एक गिरोह का फ़र्द था जिसने अंग्रेज़ पुलिस अफ़सर जान सांडर्स को मौत के घाट उतार दिया था। उसने असेम्बली में भी बम फेंका था, मगर उसमें कोई शख़्स हलाक नहीं हुआ।

अगरचे ज़्यादातर दहशतगर्दी की हरकतें अफ़राद और गिरोहों के हाथों अंजाम दी गयी हैं मगर ताक़तवर मुमालिक की हुकूमतें भी इस इल्ज़ाम से बरी नहीं की जा सकतीं। बर्तानवी दहशतगर्द पीटर ब्लीच पर मग़रिबी बंगाल के पुरोलिया ज़िले में तैयारे के असलहे गिराए जाने का इल्ज़ाम था। कलकत्ता हाई कोर्ट ने उसे सात साल की सज़ा सुनाई थी मगर बर्तानवी हुकूमत के मुसलसल दबाव के तहत हुकूमते हिन्द को उसे रिहा करने पर मजबूर होना पड़ा। उसे वाजपेई हुकूमत ने सदारती माफ़ी दिलवाई। दिलचस्पी की बात यह है कि उसकी रिहाई के लिये बर्तानवी वज़ीरे आज़म टोनी ब्लेयर ने दो बार हिन्दुस्तान का दौरा किया हालांकि टोनी ब्लेयर ख़ुद को आतंकवाद के ख़िलाफ़ होने वाली जंग का चैम्पियन बताने से नहीं थकते थे। मज़ीद दिलचस्पी की बात यह है कि इस मुक़दमे में ज़ेरे हिरासत मज़ीद पांच लोगों को, जो कलकत्ता जेल में क़ैद थे, वाजपेई सरकार ने माफ़ी दे दी। (टाइम्स ऑफ़

इण्डियाः 22/07/2000) इसी तरह एक और केस अमरीकी दहशतगर्द रेमंड डेविस का है, जो लाहौर में तालिबान को दहशतगर्दी के लिये भरती करता हुआ पाया गया। उसने लाहौर की एक आम शाहेराह पर दो लोगों को गोली भी मारी थी, जिसमें उन दोनों की जान चली गयी थी और एक तीसरा शख़्स उससे पैदा शुदा सूरते हाल में मर गया था। इस मामले में पाकिस्तान पर ज़बरदस्त दबाव डालकर पूरे मामले को दबाया गया और सीआईए ने मृतकों को ख़ून का मुआवज़ा देकर रेमंड को रिहा करा लिया था।

1976ई0 में एक क्यूबाई जहाज़ को बम से उड़ाने का वाक़्या पेश आया था, जिसमें 73 जाने गयी थीं। यह राज़ केवल 2005ई0 में फ़ाश हुआ कि उस वाक़्ये में मुलव्विस पोसाद अमरीकी सीआईए का एजेन्ट था। उसे अमरीकी रियासत फ़्लोरिडा में रखा गया था। हुकूमते क्यूबा ने पोसाद को क्यूबा के हवाले किये जाने की मांग की थी, जिसे अमरीका ने ठुकरा दिया था। इस दरख़्वास्त के मुस्तरद किये जाने पर बर्तानवी अख़बार गार्डेन ने लिखाः यह वाक़्या इन्तिहाई अहम है क्योंकि यह उस बात का मज़हर है कि अमरीका अपने मुख़ालिफ़ीन से जिस अख़लाक़ी बर्ताव का मुतालबा करता है वह अपने इत्तिहादियों पर लागू क्यों नहीं करता। (डंकन कैम्पबेल की रिपोर्ट विषयः भ्वू जीम ैन्क्मंसे पजी जीम तिपमदकें दक थ्वमे गार्डियन न्यूज पेपर 2005 में शाया करदा इस रिपोर्ट को "दि हिन्दू" ने भारत में दिनांक 30/07/2005 को प्रकाशित किया)

इसके अलावा अमरीका पर यह भी इल्ज़ाम है कि वह ईरानी हुकूमत के मुख़ालिफ़ीन की हदशतगर्द तन्ज़ीम , मुजाहिदीने ख़ल्क़ की ताईद, माल की फ़राहमी और अमरीकी रियासत नेवाडा में तरबियत भी करता रहा है। इस सिलसिले में नामवर अमरीकी सहाफ़ी सेमोर हर्श ने कई तफ़सीलात से नक़ाब कुशाई की है। उसके न्यूयार्क नामी रिसाले में मतबूआ मज़मून के मुताबिक़ मुजाहिदीन ख़ल्क़ ने इस्राईली ताईद के साथ कई ईरानी क़ायदीनों को हलाक करने की साज़िशें रचीं और उनमें कामयाबी हासिल की है। अमरीकी मुहकमे ख़ारिजा 1997 ई0 से मुजाहिदीन ख़ल्क़ को दहशतगर्द तन्ज़ीमो की फ़ेहरिस्त में शामिल रखे हुए है। इसका मतलब यह है कि अमरीका एक ऐसी दहशतगर्द तन्ज़ीम की पुश्तपनाही करता रहा है जो दहशतगर्दाना सरगर्मियों में मुलव्विस रहा। दि गार्डियन के सहाफ़ी ग्लेन ग्रेन वाल्ड ने उन हक़ीक़तों को तश्त अज़ बाम किया है। मुलाहिज़ा हो यह रिपोर्टः (http:www.policymic.com/article/658/u-s-fundend-iran-terrorist-group-says-shocking-report)

पश्चिमी देशों की यह दहशतगर्दी की ताईद, मदद और इश्तराकी सरगर्मिया इस बात का खुला ऐलान है कि मगरिब का दामन भी साफ़ नही और यह रिपोर्टें मग़रिबी मुालिक के दहशतगर्दी से मुताल्लिक़ इस की मुनाफ़क़ाना प्रोपगन्डा की पोल खेलती है। इससे वाज़ेह है कि अमरीका और बर्तानिया, जैसे मुमालिक दहशतगर्दी को महज़ ग़रीब और कमज़ोर मुमालिक को धमकाने के लिये इस्तेमाल करते हैं।

यह अम्र भी हालिया वाक़्यात से वाज़ेह होकर सामने आती है कि मुस्लिम मुमालिक में तश्द्दुद और दहशतगर्दी की हौसला अफ़ज़ाई के लिये वहां के हुक्मरानों और हुक्मरानी से बेज़ारी का अवामी माहौल भी साज़गार फ़िज़ा फ़राहम करता है। मग़रिबी कूव्वतें मुस्लिम मुमालिक में जम्हूरी क़दरों को पनपते नहीं देखना चाहते और कभी चुनाव में ऐसे हुक्मरां अगर बरसरे इक़्तिदार आ भी जाएं तो बिलवास्ता या बिला वास्ता ताईद से अपने पिट्ठू, हाशिया बरदार और कठपुतली हुक्मरानों को दोबारा बहाल करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। कुछ दिन पहले मिस्र के मुन्तख़ब सदर मुहम्मद मुरसी से इक़्तिदार से ग़ैरक़ानूनी बेदख़ली पर अमरीका का क्या रद्देअमल रहा वह अयां हैं। जब बात "बैलेट" से नहीं बनी तो अमरीकी और सहूयनी एजेन्टों ने वहां "बुलेट" का सहारा लिया। यह नामनिहाद जम्हूरी नवाज़ ताक़तों की मुनाफ़क़त और दोग़ली पॉलिसी का मज़हर है। उनके मफ़ादात का हुसूल कठपुतली हुकूमतों और एजेन्टों से पूरे होते हैं।

मुस्लिम दुनिया के बड़े हिस्से में बढ़ रही

दहशतगर्दी, अस्करियत या तश्द्दुद के पीछे वहां जम्हूरियत और अवामी हुकूक के एहतराम की अदम मौजूदगी जैसे अवामिल कार फ़रमा हैं। अगर मशरिकी वुस्ता का जायज़ा लिया जाए तो अंदाज़ा हो गा कि वहां न तो शख़्सी आज़ादी हासिल है और न मसावात और इन्साफ़ दस्तयाब हैं। डिक्टेटरों, शाहों और अमीरों के पंजे में जकड़ी इन्सानियत आज़ादी की फ़िज़ा में सांस लेने को मुज़तरब है। इन मुमालिक में तेल की दौलत तो ज़रूर उबली है मगर उसने उमरा और रूअसा के हाथों में बेपनाह इक़्तिदार और रसूख दे दिया है। अवाम के दरमियान वसीअ पज़ीर मआशी खलीज हर लम्हा मुंह फाड़े दबाए गये और कुचले अवाम को बग़ावत पर आमादा करती नज़र आती है। सरकारी पॉलिसियां तरतीब देने में अवाम का कोई रोल नहीं। मुख़ालिफ़ीन रातों–रात ग़ायब कर दिये जाते हैं। अख़बारात और रेडियो सेंसर किये जाते हैं। क़ौमी दौलत और वसाएल पर उमरा और वसाएल का पूरी तरह कंट्रोल अवाम को तरक़्क़ी के मवाक़ों से महरूम रखता है।

लिहाज़ा आज़ादी और इन्साफ़ के अलमबरदारों को दीगर मुमालिक में पनाह लेनी होती है। मगर उनसे बेशतर शाहों, उमरा और फ़ौजी आमरों को अमरीका, बर्तानिया और दीगर मग़रिबी मुल्कों की सरपरस्ती हासिल है। लिहाज़ा उन मुमालिक में पनप रही अस्करियत पसंदी और बाज़ हालात में दहशतगर्दी में मग़रिब का किरदार बेनक़ाब नहीं हो पाता। ज़रा अपने ज़हन को कुछ बरस पीछे ले जाइये। ईरान और मिस्र में पार्ल्यामानी इन्तिख़ाबात 2012–2013 में हुए। मिस्र में सदर हुस्नी मुबारक की सरबराही में हुई धांधलियों का तज़किरा मग़रिबी मीडिया से बिल्कुल ग़ायब रहा मगर ईरान के सदर अहमदी नज़ाद के ख़िलाफ़ मामूली सी सोरिश को मग़रिबी मीडिया की शह सुर्ख़ियों में लगातार जगह मिलती रही। ऐसा क्यों हुआ?

क्योंकि ईरान की हुकूमत मग़रिब के मफ़ादात की राह में कांटे की तरह हायल है जबकि सदर हुस्नी मुबारक अमरीका का पालतू हुक्मरा रहा है और मग़रिबी मीडिया क्योंकि ख़ुद अपनी हुकूमत के पिट्ठुओं के ख़िलाफ़ अलमे बग़ावत बुलन्द कर सकता है। ज़ाहिर है कि मग़रिबी मोमालिक महज़ उन पिट्ठुओं और हाशिया बरदार हुक्मरानों की मदद से ही इस्लामी दुनिया के वसाएल तक रसाई हासिल कर सकते हैं।

यह अम्र भी वाज़ेह होकर सामने आता है कि अमरीका के परस्तार और सहयूनी ताक़तों के असीर सऊदी सरबराहान की वफ़ादारियों को पिछले दिनों मिस्र के हवाले से दुनिया ने देखा। अब एक जानिब शरीअते इस्लामी के निफ़ाज़ का दम भरने वाली सऊदी हुकूमत, शरीअत के निफ़ाज़ का अज़्म रखने वाली मिस्र में मुर्सी की हुकूमत को बरतरफ़ किये जाने पर यह बयान जारी करती है कि "बिलादे अरब अभी जम्हूरियत के लिये साज़गार नहीं है" जम्हूरी हुकूमत को ग़ैर जम्हूरी अंदाज़ में बरतरफ़ करके गोया फ़ौजी दस्ता फ़ौजी बग़ावत के ज़रिये मुर्सी का तख़्ता उलटता है। और इस फ़ौजी हुकूमत को सऊदी सरबराहान अपने सरकारी माली ताऊन से नवाज़ते हैं। ऐसा कुछ खेल दूसरे मुस्लिम देशों में खेला जाता रहा है।

मग़रिब की इस पुश्तपनाही की क़ीमत उन मोमालिक के अवाम को अपनी आज़ादी और हुकूक को रहन रखकर अदा करनी होती है। जब यह घुटन बग़ावत की राह लेती है तो अवाम हर उन नज़रियात का सहारा लेते हैं जो उनके हत्थे चढ़ जाए। लिहाज़ा कई मोमालिक में इस्लामी अनासिर ही इस मुतबादिल नज़रिये के अलमबरदार के किरदार में नज़र आते हैं।

ज़ुल्म को दहशतगर्दी के लिये मुहर्रिक बनाया जाता है।

माइकल वाल्ज़र जो नामवर सियासी मुफ़क्किर हैं। उनहोंने इस मौज़ू पर सैर हासिल बहस की है। वह लिखते हैं कि इब्तिदाअन ज़ुल्म को दहशतगर्दी के लिये मुहर्रिक बनाया जाता है और बाद में ख़ुद दहशतगर्दी ज़ुल्म का मुहर्रिक बन जाती है। पहली सिचूएशन में इन्तिहा पसंद इश्तराकी इस हीला का सहारा लेते हैं जबकि दूसरी सिचूएशन उन लोगो के लिये बहाना साबित हुई है जिनको हम नये कुनूतियत पसंद कहते हैं और जिनको हालिया बर्सों में अमरीका में ख़ासी

अहमियत हासिल हुई है।

यह सही है कि सियासी तश्द्दुद नापसंदीदा अमल है। दहशतगर्दी सियासी तशद्दुद ही की एक किस्म है। हुकूमतें ख़ुद अपने मुख़ालिफ़ीन के ख़िलाफ़ सियासी तश्द्दुद का इस्तेमाल करती हैं। फ़िलहाल सोशल मीडिया के जुहूर ने अवाम को आवाज़ उठाने का मौक़ा फ़राहम कर दिया है और ग़ैर जम्हूरी हुक्मरां और हुकूमतें इन बग़ावत आमेंज़ आवाज़ों को मुकम्मल तौर पर दबाने और कुचलने से क़ासिर हैं लिहाज़ा ग़ैर मक़बूल हुक्मरानों के ख़िलाफ़ सियासी तश्द ुद में इज़ाफ़ा एक नागुज़ीर अमल है जिससे बचना नामुमकिन होगा।

फ़िलिस्तीनी अवाम ने सालहासाल इस्राईली राकेटों का मुक़ाबला महज़ गुलेल से चलाए गये संगरेज़ों और ख़ुश्तबारी से किया था। मगर अब हालात में तब्दीली आयी है। इस्राईलियों के बढ़ते मज़ालिम के जवाब में हमास और हिज़बुल्लाह नामी तन्ज़ीमों ने फ़िलिस्तीनियों को ज़्यादा मजबूत और बाक़ायदा जवाबी कार्यवाही के लिये मुनज़्ज़म कर दिया है।

इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान में अमरीकी हमलों और क़ब्ज़ों से यह बात खुलकर सामने आ गयी है कि अमरीका मश्रिकी वुस्ता में फ़िलिस्तीन के मसले पर देरपा हल के बजाए तनाज़े और कशमकश को सारी मुस्लिम दुनिया में तौसी के अज़ाएम की पॉलिसी को रोए बा अमल लाने के लिये इस्तेमाल कर रहा है ताकि अमरीकी अस्लहासाज़ कम्पनियां नये असलहे की कारकरदिगी की आज़माइश के लिये नये जंगी मैदान हासिल कर सकें। इराक़ में अमरीकी जंग के लिये अमरीकी ख़ारिजी उमूर के महकमे और मीडिया ने सद्दाम हुसैन के ज़ेरे हुकूमत इराक़ पर वसीअ पैमाने पर तबाही के असलहे की ज़ख़ीरा अंदोज़ी का बहाना तराशा। अमरीकी क़ब्ज़े के बाद इस झूठ की क़लई खुल गयी।

मगर इससे यह भी ज़ाहिर हो गया कि अमरीका और मग़रिब की जंगजूयाना ज़हनियत तश्द्दुद और क़त्ल व ग़ारतगरी की फ़ितरत में लामहदूद हीलातराशियों के लिये मजबूर करती रहेगी। इन अवामिल से जो नाउम्मीदी और मायूसी की फ़िज़ा पैदा होती है उसमें मुसिलम दुनिया में कुछ ताक़तों को शय दी है जो तश्द्दुद का देरपा हल देखने के ख़्वाहिशमन्द हैं। अफ़ग़ानिस्तान पर हमले और क़बज़े के कई साल गुज़र चुके हैं और अब अमरीका उन्हीं तालिबान के आगे धुटने टेकता और रुख़्सती हासिल करने की भीख मांगता नज़र आ रहा है। जिनको उसने 2001 में दहशतगर्द क़रार दिया था बल्कि अब अमरीकी स्टेट डिपार्टमेंट उन्हीं ख़ूं आशाम तालिबान में नेक तालिबान और बुरे तालिबान की तमीज़ करता दिखता है।

अमरीका और मग़रिब की पॉलिसियों से यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि इस्लाम को दहशतगर्दी के लिये कुसूरवार ठहराने का रूझान मश्रिकी वुस्ता में अमरीकी असर को देरपा बनाने और इस्राईल को इस्तहकाम बख़्शने की पॉलिसी का हिस्सा है।

आज दुनिया में जो कुछ हो रहा है उसके लिये इस्लाम और मुसलमानों को लान तान करना ग़ैर मुन्सिफ़ाना अमल होगा। मग़रिब की पॉलिसियों में तक़रीबन निस्फ़ सदी से महज़ मुसलमानों को अपना हरफ़े ज़ुल्म बना रखा है लिहाज़ा मुस्लिम दुनिया में मग़रिब के ख़िलाफ़ ग़म व ग़ुस्सा और इन्तिक़ाम उबलता नज़र आ रहा है। यह एक फ़ितरी रद्दअमल है जो हमें श्रीलंका, शुमाली आयरलैंड और कांगो में नज़र आता है। इस्लाम और मुसलमान दुनिया में अमन और सियासी इस्तहकाम के ख़्वाहां हैं और उनकी यह ख़्वाहिश है कि दुनिया की अवाम को उनकी जानों, मालों, इज़्ज़त की हिफ़ाज़त की ज़मानत हासिल हो।

इन तमाम दलाएल से यह वाज़ेह है कि दहशतगर्दी का मुहर्रिक इस्लाम नहीं बल्कि मग़रिब की वह इन्सानियत कुश पॉलिसियां है जिनके ज़रिये से वह सारी क़ौमों को अपना दस्तेनगर बनाना चाहते हैं। लिहाज़ा दुनिया में दहशतगर्दी के ख़ात्मे के लिये इस्लाम और मुसलमानों को मतऊन करने के बजाए दुनिया से ज़ुल्म और नाइन्साफ़ी को ख़त्म करना होगा।

राजनीतिक हाशिये पर क्यों है मुसलमान

डॉक्टर मुज़फ्फ़र हुसैन ग़ज़ाली

राजनीति में विशेष रूप से चुनावी राजनीति में उतार–चढ़ाव आते रहते हैं। कभी किसी पार्टी का वर्चस्व होता है तो कभी किसी पार्टी का। कभी कोई नारा काम कर जाता है तो कभी कोई। कभी कोई नज़रिया मज़बूती के साथ उभर कर सामने आता है तो कभी कोई। लेकिन ऐसा बहुत कम होता है कि चुनावी राजनीति में हमेशा एक वज़न रखने वाला सम्प्रदाय अचानक बेवज़न हो जाए या उसे राजनीतिक रूप से अछूत बना दिया जाए। यदि किसी देश में ऐसा होता है तो इसका मतलब यह होगा कि कोई बहुत बड़ा खेल हुआ है या फिर केवल राजनीतिक लाभ की ख़ातिर उस सम्प्रदाय को बर्फ़ में लगा दिया गया है। भारत में पिछले कुछ सालों में और विशेषतयः पिछले चार सालों के दौरान एक ऐसा बड़ा किन्तु राजनीतिक रूप से इन्तिहाई ख़तरनाक खेल खेला गया है जिसके कारण भारतीय मुसलमान जो कि हमेशा राजनीतिक रूप से एक ताक़त रहे हैं और चुनाव के दौरान हर राजनीतिक पार्टी उनका समर्थन पाने के प्रयास में रहती थी, अचानक अछूत बना दिये गये है। अब तो वे पार्टियां भी उनका नाम लेने से घबराती हैं तो स्वयं को मुसलमानों के मसीहा के तौर पर पेश करती थीं और मुसलमान भी बड़ी संख्या के साथ उनका समर्थन करते थे।

मुसलमान आज़ादी के बाद तमाम नाइन्साफ़ियों के बावजूद कांग्रेस का साथ देते रहे। उन्होंने 6 दिसम्बर 1992 तक उसका साथ दिया लेकिन उसके बाद वह उससे नाराज़ हो गये और बरसों तक नाराज़ रहे। अब जबकि धीरे–धीरे उनकी नाराज़गी कम होती जा रही है और वह कांग्रेस के क़रीब फिर आने के लिये ख़ुद को तैयार करने लगे हैं तो कांग्रेस ने ख़ुद को मुसलमानों से दूर कर लिया है। वह आर एस एस तथा भाजपा की ओर से बुने गये एक ऐसे राजनीतिक जाल में फंस गयी है जिससे वह बाहर निकलना भी चाहे तो नहीं निकल सकती है। इसने ख़ुद को इस जाल से बाहर निकालने के लिये वही तरीक़े अपनाने शुरू कर दिये जो बीजेपी या मोदी ने अपनाए थे। कांग्रेस अब दोबारा देश के राजनीतिक पटल पर आने हेतु मुसलमानों का साथ छोड़ने तक को तैयार हो गयी है। यूं तो यह बातें हमेशा होती रही हैं कि कांग्रेस बीजेपी की बी टीम है और बहुत से कांग्रेसी नेताओं ने अपनी धोती के अन्दर आरएसएस की नेकर पहन रखी है। लेकिन किसी ने भी खुलकर इस तरह वह बात नहीं कही जो पिछले दिनों कांग्रेस की अध्यक्षा सोनिया गांधी ने कही। हालांकि सोनिया गांधी के सेक्यूलर राजनीतिक दृष्टिकोण पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता, उन्होंने यह साबित करने की कोशिश की कि उनकी पार्टी मुसलमानों की हमदर्द या वफ़ादार नहीं है।

उन्होंने 9 मार्च को नई दिल्ली में आयोजित इन्डिया टुडे कॉन्क्लेव में एक इन्टरव्यू के दौरान कहा था कि, "बीजेपी ग़लत तरीक़े से जनता को यह समझाने में सफल हो गयी है कि कांग्रेस एक मुस्लिम पार्टी है और कांग्रेस लीडरों का मन्दिरों का दौरा उस भ्रान्ति को समाप्त करने का एक प्रयास है।" इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि मेरी पार्टी में हिन्दु बहुत अधिक संख्या में हैं लेकिन दूसरे वर्ग भी हैं और मुसलमान भी हैं। अतः मैं यह बात समझने में असमर्थ हूं कि कांग्रेस को मुस्लिम पार्टी के रूप में क्यों प्रस्तुत किया गया है।

यूं तो उनका यह बयान बज़ाहिर बड़ा मासूम और सादा लगता है लेकिन इसकी तह में उतरने या उसके बैनस्सुतूर पर नज़र डालने के बाद यह बात साफ़ हो जाती है कि कांग्रेस भी सत्ता में वापस आने के लिये

ख़ुद को एक हिन्दु पार्टी के रूप में जिसमें मुसलमानों के लिये कोई जगह न हो या जिसको कम से कम मुसलमानों से कोई हमदर्दी न हो और जिसे मुसलमानों के वोटों की ज़रूरत भी न हो। क्योंकि इसके अनुसार अगर इसने मुसलमानों से वोट मांगे या ख़ुद को मुसलमानों की हमदर्द जमाअत के तौर पर पेश करने की कोशिश की तो उसे हिन्दुओं के वोट नहीं मिलेंगे। वह उससे दूर हो जायेंगे। उनके यहां इस बयान के बाद अंग्रेज़ी दैनिक इन्डियन एक्सप्रेस में एक बहस छिड़ गयी कि क्या मुसलमान भारत के राजनीतिक माहौल में अछूत बना दिये गये हैं?

अब्दुल ख़ालिक़ राम विलास पासवान की लोकजन शक्ति पार्टी में एक मुस्लिम चेहरे के तौर पर जाने जाते हैं। उन्होंने इन्डियन एक्सप्रेस में एक कॉलम लिखा। 31 मार्च के इस कॉलम में उन्होंने हर्ष मिन्दर की हिमायत और रामचन्द्र गुहा की मुख़ालिफ़त की। वह लिखते हैं कि रामचन्द्र गुहा के मज़मून को पढ़कर सकते में आ गया। उन्होंने मुसलमानों की तस्वीर कशी एक ही ब्रश से कर दी और बुर्का और टोपी को कुरूने वुस्ता की अलामत क़रार दिया है। वह एक तारीख़दां की हैसियत से उनकी शख़्सियत का एतराफ़ करते हुए उनपर बहुत से मुआमिलात में मुसलमानों के मुबनी बर हक़ीक़त मौक़िफ़ को नज़रअंदाज़ करने का इल्ज़ाम आएद किया। वह लिखते हैं कि तश्वीशनाक बात यह है कि हुकूमती इदारों ने अक्सर व बेशतर मौक़ें पर अक्सरियत के एजेन्डे को नाफ़िज़ करने के लिये उसके साथ साज़ बाज़ कर ली।

मुल्क के मारूफ़ सहाफ़ी और कॉलमनिगार कुलदीप नैयर साबिक़ एम पी मुहम्मद अदीब और जस्टिस मुहम्मद सुहैल ऐजाज़ सिद्दीक़ी वग़ैरह भी इस सूरतेहाल पर बारहा अपनी तश्वीश का इज़हार कर चुके हैं। मज़कूरा शख़्सियात ने नई दिल्ली में आयोजित एक सेमिनार में इज़हारे ख़्याल करते हुए मौजूदा हालत को मुल्क के लिये इन्तिहाई तबाहकुन क़रार दिया। उनका कहना है कि आज वोट हासिल करना बहुत आसान हो गया है। मुसलमानों को गालियां दीजिए वोट ख़ुद ब ख़ुद मिल जाएगा। लेकिन कुलदीप नैयर इस सूरते हाल के लिये मुसलमानों को भी ज़िम्मेदार मानते हैं। वह कहते हैं कि आज मुसलमानों ने ख़ुद को सरेन्डर कर दिया है। उन्हें ऐसा करने के बजाय पूरी ताक़त के साथ खड़ा होना चाहिये और अपनी सियासी हैसियत मनवानी चाहिये। कुलदीप नैयर की मानिन्द और भी बहुत से ऐसे इन्साफ़ पसंद सहाफ़ी, दानिशवर और इन्सानी हुकूक़ के कारकुन हैं जो मौजूदा हालात पर तश्वीश ज़दा हैं।

कांग्रेस ने सोनिया गांधी के बयान पर होने वाली तनक़ीद को कोई अहमियत नहीं दी और वह यह कोशिश करती रही कि उसे भी एक हिन्दु पार्टी माना जाये। इसके लिये उसने नर्म हिन्दुत्व का सहारा लिया। हालांकि गुजरात इन्तिख़ाबात के दौरान सीनियर बीजेपी लीडर अरुण जेटली ने कहा था कि "कांग्रेस बीजेपी की नक़ल कर रही है और जब एक अस्ल हिन्दु पार्टी मौजूद है तो कोई नक़ली हिन्दु पार्टी के पास क्यों जायेगा?" यानि उन्होंने जहां यह बात वाज़ेह कि बीजेपी हक़ीक़ी हिन्दु जमाअत है वहीं यह भी उजागर कर दिया कि कांग्रेस भी हिन्दु पार्टी बनने के लिये बेताब है। कांग्रेस सदर राहुल गांधी ने जो कि गुजरात इन्तिख़ाबात के दौरान सदर के मन्सब पर फ़ायज़ नहीं हुए थे पूरी रियासत में मंदिर–मंदिर दौड़ लगायी थी। वह कभी इस मंदिर जाते तो कभी उस मंदिर। लेकिन इस ख़ौफ़ से कहीं उनकी पार्टी को फिर मुस्लिम दोस्त पार्टी का ताना न दिया जाये वह किसी मस्जिद, दरगाह या मुस्लिम और इस्लामी केन्द्र पर हाज़िरी देने से कतराते रहे। बीजेपी लीडरों ने इस पर उनके मज़हब पर सवाल खड़ा किया था और पूछा था कि वह बताएं कि वह हिन्दु हैं या नहीं। कांग्रेस की जानिब से इसका जवाब देते हुए कहा गया था कि वह जनेउ धारी हिन्दु हैं। गुजरात इलेक्शन के दौरान राहुल गांधी ने बार बार यह दिखाने की कोशिश की कि वह हिन्दु हैं और मुसलमानों से उनका कोई रिश्ता नही हैं।

इसी तरह हालिया कर्नाटक चुनाव में भी उन्होंने जोकि अपनी पार्टी के सदर बन चुके हैं यही रवैया

अख़्तियार किया। वहां भी उन्होंने कभी इस मंदिर में माथा टेका तो कभी उस मंदिर में। लेकिन पूरी मुहिम के दौरान कभी–कभी मुसलमानों के किसी मसले के बारे में अपनी ज़बान से एक भी शब्द अदा नहीं किया। उन्होंने मुस्लिम मुहल्लों और इलाक़ों में भी जाने से परहेज़ किया और अपनी हरकात व सुकूनात से यह वाज़ेह नहीं होने दिया कि उन्हें मुसलमानों से कोई हमदर्दी है। उन्होंने सिर्फ़ इस वजह से ऐसा किया कि आर एस एस ने देश में जो सियासी माहौल बना दिया है और मज़हब के नाम पर जिस तरह ज़हर घोल दिया गया है उसमें कांग्रेस को लगता है कि मुसलमानों की बात करना सियासी खुदकुशी होगी।

यह सिर्फ़ कांग्रेस का मामला नहीं है। बीजेपी तो पहले से मुस्लिम मुख़ालिफ़ पार्टी रही है। उसने कभी भी मुसलमानों को अपने क़रीब लाने की कोशिश नहीं की। उसने मुसलमानों को सियासी तौर पर बेवक़अत बनाने की मुहिम बड़ी चालाकी से चलायी और वह उसी में कामयाब भी रही। उसने विशेषतयः प्रधानमंत्री ने पिछले संसदीय चुनाव में मुसलमानों की सियासी हक़ीक़त ज़ीरो कर दी और उन्हें यह बता दिया कि उनके बिना भी इतनी शानदार कामयाबी हासिल की जा सकती है।

अगर हालिया चार बरसों में सियासी व इन्तिख़ाबी हालात का गहराई से तजज़िया किया जाये तो उसी नतीजे पर पहुंचा जा सकेगा कि दूसरी सियासी जमाअतें भी मुसलमानों का नाम लेने से डरती हैं। एक ज़माना था कि जब मुसलमान समाजवादी पार्टी के उस समय के सदर मुलायम सिंह के बड़े अक़ीदतमंद थे। वे भी राजनीतिक लाभ की ख़ातिर मुसलमानों के मसीहा बने हुए थे। यहां तक कि उन्हें मौलाना मुलायम कहा जाने लगा था। उसके बाद बहुत से मुसलमानों ने मायावती का दामन थामा। वह भी कभी–कभी मुसलमानों के मसाएल उठाती रहीं हैं। लेकिन अब सूरते हाल यह है कि समाजवादी पार्टी हो या बीएसपी दोनों में से कोई भी मुसलमानों का नाम लेने के लिये तैयार नहीं। हालांकि गोरखपुर और फूलपुर के उपचुनावों में मुसलमानों ने इन दोनों पार्टियों का इत्तिहाद का खुलकर साथ दिया। लेकिन फिर भी यह दोनों पार्टियां यह कहने की जुर्रत अपने अन्दर नहीं पातीं कि मुसलमानों के साथ नाइन्साफ़ी हो रही हैं या वे मुसलमानों को साथ लेकर चलने को तैयार हैं। कभी कोई बयान आ जाए तो अलग है। लेकिन हक़ीक़त यह है कि उनको भी मुसलमानों का नाम लेते हुए डर लगता है। वह तो मानवाधिकार संस्थाएं और कार्यकर्ता देश के वर्तमान धर्मनिरपेक्षों का एक वर्ग है जो मुस्लिम विरोधी माहौलसाज़ी के लिये पूरी ताक़त के साथ बोलता रहता है। पिछले चार सालों में अलग–अलग कारणों से मुसलमानों को निशाना बनाने के ख़िलाफ़ जितनी ताक़त से आवाज़ उठायी है उसकी कोई मिसाल नहीं है।

देश में बिलवास्ता तौर पर आरएसएस की हुकूमत क़ायम होने के बाद बतदरीज जो माहौल बनाया गया है वह मुसलमानों के ताल्लुक़ से इन्तिहाई ख़तरनाक है। आम हिन्दुओं में भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत का ज़हर भर दिया गया है। सोशल मीडिया के माध्यम से यह ज़हर तेज़ी से फैलाया जा रहा है। अलग–अलग बहानों से मुसलमानों को देश का ग़द्दार साबित करने की कोशिश क ामक़सद यही है कि उन्हें सियासी तौर पर ग़ैर अहम बना दिया जाये। आज हालात इन्तिहाई तबाहकुन हो चुके हैं। अगर यही सूरतेहाल रही तो 2019 के सांसदी चुनाव में भी मुसलमान इसी तरह सियासी बेवज़नी का शिकार होंगे और कांग्रेस समेत कोई भी पार्टी उनका नाम लेने को तैयार नहीं होगी कि मुल्क का हिन्दु वोट उससे नाराज़ हो जाएगा। अगर इस इलेक्शन में कांग्रेस जीत भी जाती है और केन्द्र में उसकी सरकार बन भी जाती है तब भी वह मुसलमानों को अपने क़रीब लाने से बचती रहेगी। ख़्याल किया जाता है कि लगभग पन्द्रह–बीस साल यही सूरतेहाल रहने वाली है। आज़ाद हिन्दुस्तान में मुसलमानों की ऐसी बेवज़नी शायद कभी देखने को मिली हो। ऐसा महसूस होता है कि मुसलमान जो एक मुल्क में दूसरी बड़ी अक्सरियत हैं सियासी अछूत बना दिये गये हैं।

अल्लाह पर भरोसा

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हदीसः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर स0अ0 ने फ़रमायाः मेरी उम्मत में सत्तर हज़ार बग़ैर हिसाब के जन्नत में जाएंगे। यह वह लोग हैं जो मन्तर नहीं कराते और बदशगुनी नहीं लेते, और अपने रब पर भरोसा करते हैं।

फ़ायदाः अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरी तरह से भरोसा करना ईमान वालों की श्रेष्ठता है और अल्लाह तआला पर ईमान रखने का एक लाज़मी हिस्सा है। कुरआन मजीद में अल्लाह तआला पर भरोसे की तालीम व तलक़ीन और उसके फ़ायदे का जगह–जगह पर ज़िक्र है। नबियों की ज़िन्दगियां भी अल्लाह पर पूरी तरह से भरोसे करने की आला मिसाल हैं और सहाबा की ज़िन्दगियां भी सौ फ़ीसद भरोसे से भरी हुई हैं। उहद की जंग के मौक़े पर सहाबा के ग़ैर मामूली एतमाद की गवाही ख़ुद कुरआन मजीद यूं बयान करता हैः "वह लोग कि जिनसे कहने वालों ने कहा कि (मक्का के) लोगों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ बहुत लोगों को इकट्ठा कर रखा है तो उनसे डरो तो उस चीज़ ने उनके ईमान में और इज़ाफ़ा कर दिया और वह बोले कि हमें तो अल्लाह काफ़ी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है।"

अल्लाह पर एतमाद इन्सान की तरक़्क़ी, मायूसी से निजात और नेक अमल से मुनासिबत का एक अहम राज़ है। इसकी बदौलत मुश्किल हालात में भी इन्सान क़दम उठाने की हिम्मत रखता है और ईमान में भी इज़ाफ़ा होता है। अल्लाह तआला से ताल्लुक़ मज़बूत होता है और इन्सान संजीदा तबियत का मालिक होता है।

अल्लाह तआला पर भरोसे के सिलसिले में कुछ कामों का लिहाज़ बहुत ज़रूरी है। वरना कभी–कभी इन्सान असबाब पर ग़ौर नहीं करता और ग़लतफ़हमी का शिकार हो जाता है। सबसे पहली चीज़ यह है कि इन्सान किसी भी काम के शुरू करने से पहले उस पर ख़ूब ग़ौर कर ले, और उसके जायज़–नाजायज़ की सभी सूरतों का जायज़ा ले ले और ग़ौर करने वाले काम में जितना हिस्सा इन्सान के अख़्तियार में हो, उस पर हर मुमकिना तदबीर और मशविरे की राह अपनाए और जो हिस्सा अख़्तियार से बाहर हो उस पर तश्वीश में न पड़े। फिर अल्लाह की ज़ात पर पूरी तरह से भरोसा करे और अच्छा नतीजा आने की सूरत में अल्लाह का शुक्र अदा करे। इसलिए कि इन्सान के ज़रिये अख़्तियार की गयी तदबीरें व मशवरे उसी के दिये गये हैं और अगर नतीजे ख़िलाफ़ हों तो फिर सब्र व इस्तिक़ामत से काम लें और यक़ीन रखें कि अल्लाह तआला इसकी मुस्बत और बेशुमार जज़ा आख़िरत के दिन अता फ़रमाएगा।

अल्लाह पर भरोसे की तफ़सील मौजूदा वक़्त में बसह का विषय बनी हुई है। कुछ लोगों का ख़्याल है कि तमाम माद्दी असबाब व वसाएल से दूरी अपनाकर अल्लाह पर भरोसा करना ही ईमान का तक़ाज़ा है। और इसी तरह इसके विपरीत कुछ लोगों का ख़्याल है कि किसी भी कामयाबी के हुसूल में इन्सान की अपनी मेहनत व असबाब व वसाएल ज़रूर अपनाना चाहिये और फिर अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिये ताकि कोई ऐसी नागहानी बात न हो जाए जो उन वसाएल की हैसियत को ख़त्म कर दे। मशहूर हदीस है कि पहले ऊंट को खूंटे से बांधो फिर अल्लाह पर भरोसा रखो। इसका यही मतलब है कि इन्सान माद्दी असबाब को सिर्फ़ वसीले की हद तक इस्तेमाल करे और अस्ल एतमाद अल्लाह की ज़ात पर रखे क्योंकि वही नफ़ा व नुक़सान का मालिक है।

ऊपर दी गयी हदीस में आप स0अ0 ने उम्मत की एक बड़ी तादाद जन्नत में दाख़िल होने वाली वह बतायी है जो अपने रब पर भरोसा करती होगी और मन्तर व बदशगुनी नहीं लेती होगी। हदीस के शब्दों से साफ़ ज़ाहिर है कि उम्मत का एक बड़ा तबक़ा उन वहमी चीज़ों का शिकार भी होगा और वह उन्हीं पर भरोसा करेगा, जिन पर भरोसे के नतीजे में अल्लाह पर भरोसे की रस्सी ढीली पड़ जाएगी और अगर ग़ौर किया जाए तो एक बड़ी तादाद अल्लाह पर भरोसे और असबाब से नज़रे हटाकर इन्हीं तरह की चीज़ों में मस्त है।

सीरिया

एक संयुक्त युद्धभूमि

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

शाम में जारी खानाजंगी इन्सानी तबाही के सातवें साल में दाख़िल हो चुकी है। हसीन व ख़ूबसूरत मुल्क खंडहर बन चुका है। लाखों की तादाद में ज़िन्दगियां तबाह हो रही हैं। बच्चे–बूढ़े, मर्द–औरत, सबके सब बिला तफ़रीक़ जिन्स व उम्र मौत के घाट उतारे जा रहे हैं। इन्सानी तबाही की जो तस्वीरें सामने आ रही हैं उन्हें देखकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मलबों के नीचे दबे हुए लोग, बिखरे हुए इन्सानी आज़ा और मासूम बच्चों की कुचली हुई लाशें इन्सानियत को शर्मसार कर रही हैं। आलमी इदारे यूनीसेफ़ (न्छप्ब्थ्) ने मुसलसल हलाकतों और तबाहियों पर कहा था कि किसी भाषा में वह शब्द नही जो उस दुख को प्रकट करने की क्षमता रखते हों। इसलिए हम विरोधस्वरूप ख़ाली ऐलामिया जारी करते हैं। इनत माम हालात में सबसे बड़ा मुजरिमाना किरदार बश्शार की इन्तिज़ामिया का है और फिर वह आलमी ताक़ते मुजरिम हैं जिन्होंने अपने "प्राक्सी वार" के लिये सीरिया जैसे ख़ूबसूरत व हरे–भरे देश को निशाना बनाया है।

जिस वक़्त मश्रिकी वुस्ता में इन्क़िलाबात की लहर चली थी तो इस बात का गुमान न था कि बरसों से पिसे हुए शाम के मज़लूम बाशिन्दे भी हुकूमत के ख़िलाफ़ उठ खड़े होंगे। शाम वह आख़िरी देश था जहां अवाम ने अलमे बग़ावत बुलन्द किया था, लेकिन शाम की यह बग़ावत न सिर्फ़ नाकाम हुई बल्कि आलमी ताक़तों को एक नया जंगी महाज़ मिल गया और बैनुल अक़वामी ताक़ते अपने–अपने मफ़ाद की ख़ातिर इस जंग में कूद पड़ीं।

रूस को इस बात का ख़तरा लाहिक़ हुआ कि अगर शाम में जारी इन्क़िलाब कामयाब हुआ और अमरीका नवाज़ अनासिर हुकूमत में आ गये तो तरतूस की बंदरगाह के अलावा यूक्रेन और क्रीमिया के हालात भी उसके हाथों से निकल जाएंगे। अमरीका को इस बात का डर है कि अगर इस्लाम पसंद हुकूमत में आ गये तो इस्राईल के ख़िलाफ़ ख़तरे की घंटी बज जाएगी। ईरान को ख़ौफ़ लाहिक़ हुआ कि अगर बश्शार हुकूमत इक़्तिदार से हटती है तो इराक़ से लेकर लेबनान तक जो शिया क्रीसेंट क़ायम हुआ है उसमें बहुत बड़ा शग़ाफ़ पड़ जाएगा। अगर मोमालिक को यह ख़तरा महसूस हुआ कि अगर ईरान नवाज़ हुकूमत क़ायम रहती है तो आने वाले दिनों में उसकी मदाख़िलत का दायरा बढ़ता ही जाएगा जैसा कि यमन में हुआ। तुर्की को कुर्दों की जद्दोजहद ने फ़िक्रमंद कर दिया कि अगर शाम में अमरीका नवाज़ हुकूमत क़ायम हुई तो वह कुर्दों का साथ देगी जिसके बाद तुर्की को कुर्द इलाक़ों से हाथ धोना पड़ सकता है। इसके अलावा अगर अलक़ायदा या दाइश जैसे ग्रुप को कामयाबी मिलती है तो फिर उन हुकूमतों के ख़िलाफ़ एक नया महाज़ें जंग खुल जाएगा। ग़रज़ हर कोई अपने–अपने मफ़ाद की जंग लड़ने के लिये शाम की खाना जंगी में कूद पड़ा जिसका ख़ामियाजा वहां के लोगों को भुगतना पड़ रहा है।

शाम कुदरती दौलत से मालामाल एक सरसब्ज़ शादाब देश था जिसका शुमार इन्सानी तहज़ीब व सक़ाफ़त के इब्तिदाई मरक़ज में होता था। आज यह तारीख़ी और ख़ूबसूरत तरीन देश साम्राजी लूट–खसोट की हवस के हाथों पूरी तरह ताराज हो चुका है। सियासी व समाजी ढ़ांचा टूट–फूट चुका है। ख़ूरेज़ तनाज़ेअ के नतीजे में कमो बेश पांच लाख लोग हलाक हो चुके हैं। इसके अलावा कई लाख लोग नक़ल मकानी पर इस क़दर मजबूर हैं िकवह अपनी जान हथेली पर लेकर मुख़्तलिफ़ मोमालिक की सरहदों को पार कर रहे हैं।

समाज वाद और पूंजीवादी निज़ाम के इम्तिज़ाज से उमूरे हुकूमत चलाता असद परिवार पिछले पैंतालिस साल से शाम की सत्ता पर क़ाबिज़ है। यह ख़ानदान मश्रिकी वुस्ता में अमरीकी मफ़ादात का हामी व निगेहबान रहा है। गोलान की पहाड़ियों को इस्राईल के हवाले करना हो या 1990 में कुवैत की आज़ादी के लिये सद्दाम हुसैन के ख़िलाफ़ अमरीकी इत्तिहादी फ़ौज में शामिल होना हो, या फिर नाइन इलेवेन के बाद अमरीका की जारिहाना कार्यवाही में उसका तआउन हो। यह ख़ानदान हमेशा अमरीका का वफ़ादार रहा है। बश्शार हुकूमत के इसी किरदार का नतीजा है कि शामी अवाम पर तमामतर मज़ालिम के बावजूद अमरीका उसके ख़िलाफ़ कमज़ोर बयानात देने और लाहासिल अमली इक़दामात तक महदूद है। ऐसी सूरत में अकवामे मुत्तहिदा भी सिर्फ़ क़रारदाद मंज़ूर करने की हद तक मुतहर्रिक है।

शाम की मौजूदा सूरतेहाल के तनाज़ुर में मुस्लिम मोमालिक और ख़ासकर अरब रियासतों पर भारी ज़िम्मेदारी है कि वह ख़ामोश तमाशाई बनने के बजाए मुश्तरका जद्दोजहद के ज़रिया इस ख़ित्ते में अमन के क़याम को यक़ीनी बनाएं। वरना यह आग फैलते–फैलते बहुत से मुस्लिम देशों को भी अपनी लपेट में ले लेगी।

दरूद व सलाम

हुज़ूर तक दरुद कैसे पहुंचता है

अल्लाह तआला ने हुज़ूर (स०अ०) तक दरूद पहुंचाने के लिये फ़रिश्ते तय कर रखे हैं, जिसका काम ही यह है कि कहीं भी किसी ने दरूद पढ़ा वह फ़रिश्ते हुज़ूर (स०अ०) की ख़िदमत में पहुंचा देते हैं। हदीसों से साबित है कि जो दरूद शरीफ़ रौज़ा–ए–शरीफ़ पर पढ़ा जाता है, वह ख़ुद हुज़ूर (स०अ०) सुनते हैं। इसलिए कि सारे अम्बिया–ए–किराम ज़िन्दा हैं। फिर हुज़ूर (स०अ०) तो सबसे अफ़ज़ल नबी हैं और ख़ातिमुल अम्बिया (आख़िरी नबी) हैं। आप (स०अ०) तो ज़रूर ज़िन्दा होंगे। बाक़ी वह दरूद जो रौज़ा–ए–शरीफ़ के अलावा दूर–दराज़ के इलाक़ों में लोग पढ़ते हैं, उसको फ़रिश्तें आप (स०अ०) को पेश करते हैं। हदीस शरीफ़ में आता है कि हर दरूद पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है।

दरूद शरीफ़ से शफ़ाअत

शफ़ाअत भी हर मुसलमान के लिये एक बहुत बड़ी नेमत है, जिसको आप (स०अ०) की शफ़ाअत नसीब हो गयी, वह बामुराद हो गया। रसूलुल्लाह (स०अ०) ने इरशाद फ़रमाया है:

"हज़रत अबूदरदा (रज़ि०) से रिवायत है कि जो शख़्स सुबह व शाम दस बार दरूद पढ़ेगा उसको शफ़ाअत नसीब होगी।"

सदक़े की जगह दरूद शरीफ़

बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो पैसा न होने की वजह से सदक़ा नहीं कर सकते और वह इस नेमत से महरूम रहते हैं, लेकिन हुज़ूर (स०अ०) ने इसका भी बदल अता फ़रमाया है, आप (स०अ०) फ़रमाते हैं:

"जो शख़्स सदक़ा न कर सके वह मुझपर दरूद पढ़े।"

एक वाक़्या

दरूद शरीफ़ पढ़ने के सवाब और उसके अज्र के बहुत से वाक़्यात किताबों में दर्ज हैं, हम आख़िर में सिर्फ़ एक ही वाक़्या लिखते हैं:

"एक साहब का इन्तिक़ाल हुआ, किसी ने ख़्वाब देखा कि वे शीराज़ की जामा मस्जिद में खड़े हैं, और उन पर एक जोड़ा है और उस पर एक ताज जो जवाहरात और मोतियों से लदा हुआ है, ख़्वाब देखने वाले ने उनसे पूछा। उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी और मेरा बहुत इकराम किया और मुझे ताज अता फ़रमाया, और यह सब नबी करीम (स०अ०) पर कसरत से दरूद की वजह से हुआ है।"

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 10 | OCTOBER 2018 | VOLUME: 10

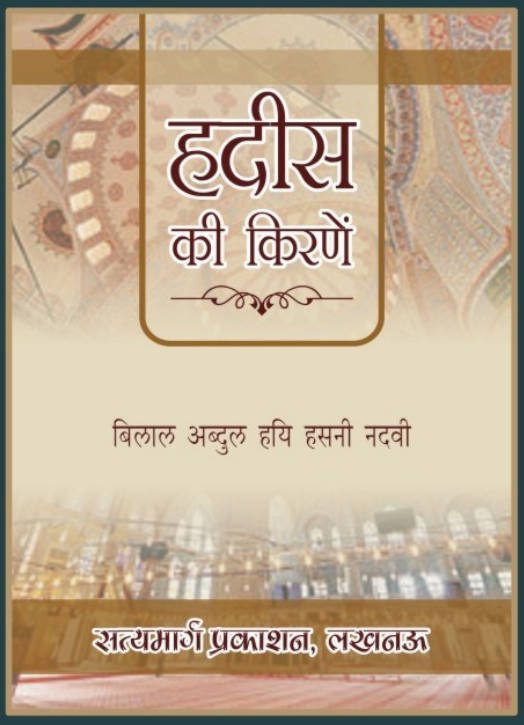

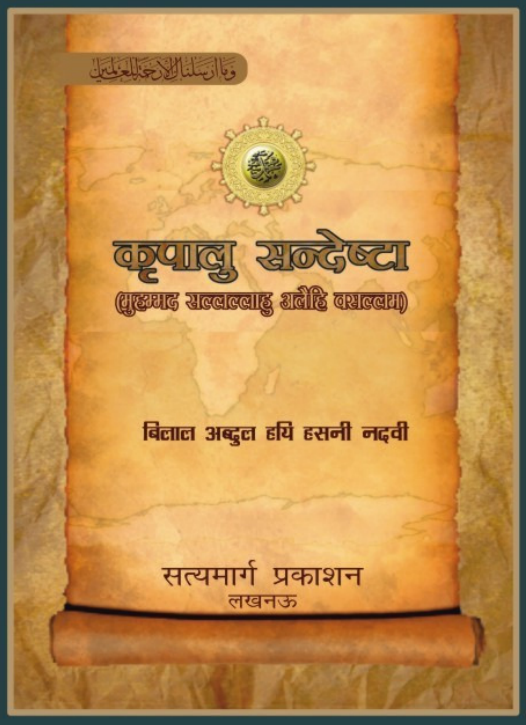

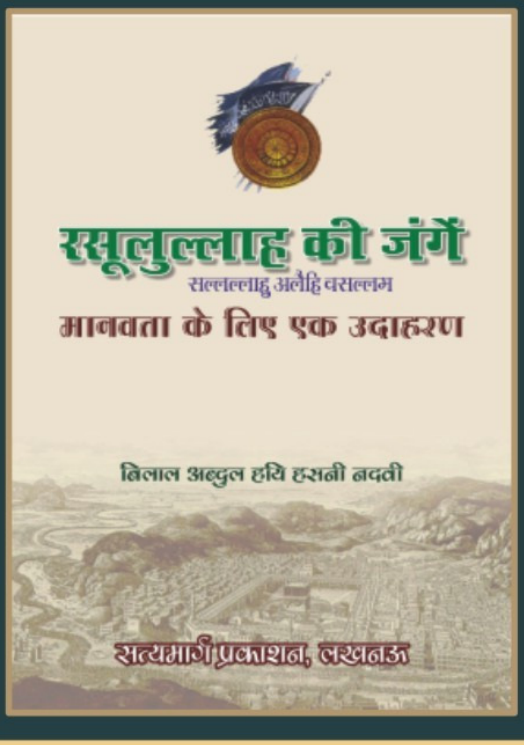

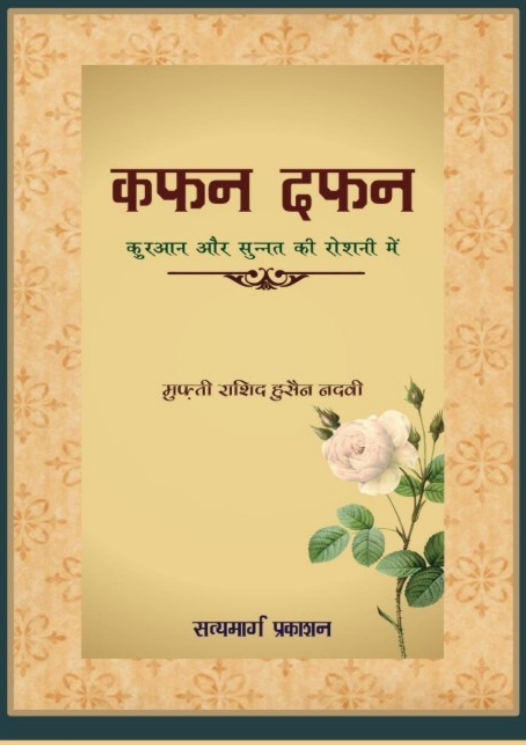

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.